

# तारांगण

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही गृहपत्रिका दिसंबर, 2024



# TAARANGAN

Bank of India's Quarterly House Journal December, 2024



6

UPI: Revolutionizing Digital Payments in India & Its impact on BOI



कृत्रिम बुद्धिमत्ता: नवाचार की दिशा में एक कदम .. 9  
बैंकिंग सेवा क्षेत्र की धुरी : ग्राहक सेवा .....14

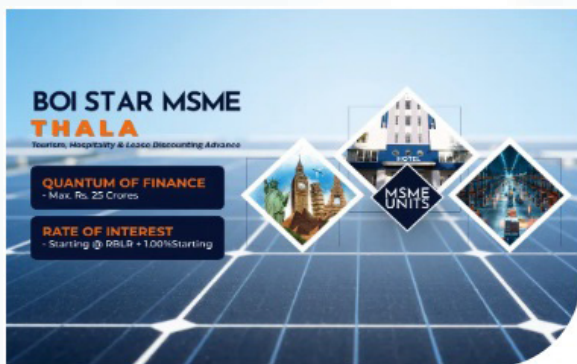


CORRUPTION FREE INDIA FOR A DEVELOPED NATION ..... 16

घनीभूत होते शहरों का पर्यावरण.....20

12

एमएसएमई ऋण - एक परिचय



Unforgettable Memory at 3,636 Meters Above Sea Level (Sandakphu)

23



उदार उसकी छाया.....	25
‘बदलाव की लत’, सही या गलत?.....	27
नटी बिनोदिनी .....	32
Review of Bertrand Russell’s Book ‘The Analysis of Mind’ in the Context of Vedic Philosophy .....	34
‘बीस चौबीस’ का फिल्मी सफर .....	37
वार छोड़ ना चार .....	41
डिजिटल अरेस्ट .....	43



Convening of Parliamentary Committee Visits in Public Sector Banks.....	45
एक पेड़ माँ के नाम .....	49
विक्रमशिला विश्वविद्यालय : हमारे गौरवशाली अतीत का मूक अनुस्मारक .....	52

भारत सरकार का उपक्रम (A Government of India undertaking)  
बैंक ऑफ इंडिया की द्विभाषी तिमाही गृहपत्रिका  
A Quarterly Bilingual House Journal of Bank of India  
अंक: अक्तूबर-दिसंबर 2024  
Issue: Oct.-Dec. 2024

### संरक्षक / Patron

रजनीश कर्नाटक  
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ  
**Rajneesh Karnatak**  
MD & CEO

### संपादकीय मंडल / Editorial Board

ए.के. पाठक  
मुख्य महाप्रबंधक  
**A. K. Pathak**  
Chief General Manager

### बी.एस. फोनिया

उप महाप्रबंधक  
**B.S. Fonia**  
DGM HR

### मऊ मैत्रा

संपादक  
**Mou Maitra**  
Editor

### अमरीश कुमार

सह-संपादक  
**Amrish Kumar**  
Co-Editor

### Back Cover

Painting by - Saurabh Shrivastav  
Sr. Manager, Mumbai North Zone

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों ।

### Printed, Published and Edited by

Mou Maitra on behalf of Bank of India,  
Published from Head Office :  
Star House, G-5, 'G' Block,  
Bandra Kurla Complex, Bandra (E),  
Mumbai - 400 051 and printed at

**PRINT PLUS PVT. LTD.,**  
212, Swastik Chambers, S.T. Road,  
Chumbur, Mumbai 400071





## प्रबंध निदेशक एवं सीईओ / MD & CEO

प्रिय साथियो

मुझे तारांगण का दिसंबर 2024 का यह अंक आपके साथ साझा करते हुए खुशी हो रही है। हम वित्तीय वर्ष 25 की अंतिम तिमाही में प्रवेश कर चुके हैं और बैंक के वित्तीय वर्ष 25 की तीसरी तिमाही के परिणाम अब हमारे सामने हैं। बैंक का कुल वैश्विक कारोबार वर्ष दर वर्ष 13.62% की वृद्धि के साथ ₹14,46,295 करोड़ पर पहुंच गया है, जबकि वैश्विक जमा राशियाँ वर्ष दर वर्ष 12.29% की वृद्धि के साथ ₹7,94,788 करोड़ हो गई हैं और वैश्विक अग्रिम 15.30% की वृद्धि दर हासिल करते हुए ₹6,51,507 करोड़ पर पहुंच गए हैं। इस तिमाही में हमारा निवल लाभ ₹2,517 करोड़ रहा, जो हमारे द्वारा रिपोर्ट किया गया अब तक का सर्वाधिक निवल लाभ है। ये उपलब्धियाँ सभी स्टाफ सदस्यों के सामूहिक प्रयास और समर्पण का प्रमाण हैं।

अपनी लाभप्रदता में सुधार करने के लिए यह जरूरी है कि हम आस्ति गुणवत्ता बनाए रखने के अलावा आरएएम सेगमेंट, कासा और रिटेल सावधि जमा में सतत वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करें। विविध ग्राहक आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पादों और डिजिटलीकरण में तीव्र प्रगति के साथ, हम तेज, अधिक पारदर्शी और बेहतर सेवा वितरण के माध्यम से अपने ग्राहक आधार का विस्तार करने के लिए अच्छी स्थिति में हैं।

कारोबार वृद्धि में तेजी लाने के साथ-साथ, हमें स्लिपेज को कम करते हुए, नकद वसूली तथा अपग्रेडेशन को बढ़ाकर एनपीए को कम करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। आइए, इस वर्ष हम उत्कृष्ट परिणाम देने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें।

सरकार की वित्तीय समावेशन योजनाओं के कार्यान्वयन को प्राथमिकता देना, हमारा सबसे प्रमुख दायित्व है। हमें जन सुरक्षा योजना (पीएमएसबीवाई, पीएमजेजेबीवाई, एपीवाई), मुद्रा योजना, स्टैंड अप इंडिया, पीएम विश्वकर्मा, पीएम सूर्यघर योजना और पीएमस्वनिधि योजना जैसे प्रमुख सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से अधिकतम पात्र लाभार्थियों तक पहुंचने का प्रयास करना चाहिए, ताकि वे बैंकिंग सुविधाओं का लाभ ले सकें और अपनी समृद्धि के साथ-साथ राष्ट्र की प्रगति में योगदान दे सकें।

नव वर्ष का स्वागत करते हुए, मैं सभी स्टाफ सदस्यों को तारांगण में प्रकाशित सूचनाप्रद लेखों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। आइए, उत्साह और सर्वश्रेष्ठ बनने की प्रतिबद्धता के साथ नए वर्ष में अपना कदम रखें।

शुभकामनाओं सहित

(रजनीश कर्नाटक)/(Rajneesh Karnatak)

तारांगण / अक्टूबर-दिसंबर, 2024 / 4

Dear Colleagues,

I am delighted to share Dec'24 issue of Tarangan with you. We have entered the last quarter of FY'25 and the Bank's results for Q3 FY'25 are now before us. Bank's total Global Business has grown YoY by 13.62% reaching ₹14,46,295 crore while Global Deposits have increased YoY by 12.29% to ₹7,94,788 crore and Global Advances have reached ₹6,51,507 crore, achieving a YoY growth rate of 15.30%. Our Net Profit for the quarter is ₹2,517 crores, the highest number we have ever reported. These achievements are testament to collective efforts and dedication of all staff members.

It is imperative that we focus on sustainable growth in RAM segments, CASA, and Retail Term Deposits, besides maintaining asset quality to improve our profitability. With products tailored to diverse customer needs and rapid progress in the digitization, we are well-positioned to expand our customer base through faster, more transparent, and enhanced service delivery.

While accelerating business growth, we must focus on reducing NPAs by minimizing slippages and maximising cash recovery and upgradation. Let us put forth our best efforts to deliver outstanding results this year.

Prioritizing the implementation of the Government's financial inclusion schemes is our foremost responsibility. We must strive to reach maximum eligible beneficiaries through Government flagship programs such as Jan Suraksha Yojana (PMSBY, PMJJY, APY), Mudra Yojana, Stand up India, PM Vishwakarma, PM Suryaghar Yojana and PM SVANidhi Yojana, enabling them to access banking facilities and contribute to their prosperity as well as the nation's progress.

As we welcome the New Year, I encourage all staff members to explore the informative articles featured in Tarangan. Let us approach the year ahead with renewed enthusiasm and a commitment to excel.

**With Best Wishes,**

## संपादकीय / Editorial



प्रिय पाठकों,

गृहपत्रिका 'तारांगण' का यह अंक आपको समर्पित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। वित्तीय वर्ष की दिसंबर तिमाही को बैंकिंग कारोबार एवं आर्थिक परिदृश्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। यह तिमाही त्योहारी सीजन के नाम से जानी जाती है। हमारे बैंक ने भी इस वर्ष त्योहारी सीजन में ग्राहकों को अनेक आकर्षक ऑफर उपलब्ध करवाते हुए कारोबार में वृद्धि की है। फील्ड महाप्रबंधक कार्यालय, अंचल एवं शाखाओं के स्तर पर रिटेल, कृषि एवं एमएसएमई ऋणों, ऋण वसूली और तृतीय पक्ष उत्पादों के प्रोत्साहन हेतु अनेक कैम्पेन एवं कार्यक्रम चलाए गए। साथ ही भारत सरकार की योजनाओं के अनुरूप कुछ नए उत्पाद जैसे पीएम - सूर्य घर, किसान ड्रोन स्कीम 'आकाशदूत' और ऑनलाइन बचत खाता आदि भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। 'तारांगण' के इस अंक में हमने बैंकिंग से संबंधित विषयों के अलावा स्टाफ सदस्यों द्वारा प्रेषित अन्य साहित्यिक रचनाओं को भी शामिल किया है। दिसंबर तिमाही के दौरान आयोजित गतिविधियों यथा सतर्कता जागरूकता माह के कार्यक्रमों, टाउन हाल बैठकों, एक पेड़ माँ के नाम, ग्राहक आउटरीच कार्यक्रमों आदि के फोटो भी इस अंक में प्रकाशित किए गए हैं।

स्टाफ सदस्यों की ओर से पत्रिका के लिए जो साहित्यिक रचनाएँ हमें प्राप्त हो रही हैं, उनकी संख्या एवं गुणवत्ता में हो रही निरंतर वृद्धि से संपादक मंडल का मनोबल बढ़ा है। अनेक प्रतियोगिताओं में हमारे स्टाफ सदस्यों की छुपी हुई प्रतिभाएँ उजागर होती रहती हैं लेकिन हमारे प्रतिभाशाली साथियों के हिसाब से पत्रिका के साहित्य में प्रतिभागिता करने वाले स्टाफ सदस्यों की संख्या काफी कम है। हम उम्मीद करते हैं कि भविष्य में हमें विविध विषयों पर अधिक संख्या में एवं बेहतर रचनाएँ प्राप्त होने लगेंगी। पत्रिका के इस अंक की विषयवस्तु में विविधता के लिए लेख, कहानी, यात्रा वृत्तांत, विशेष उपलब्धियाँ एवं कविताओं को समाहित किया गया है। इस अंक के रचनात्मक लेखन में स्टाफ सदस्यों की प्रभावशाली लेखनी का संपादकीय टीम आभार व्यक्त करती है।

मैं नव वर्ष के आगमन पर बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों एवं ग्राहकों की सुख-समृद्धि की कामना करती हूँ और आशा करती हूँ कि वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में बीओआई स्टार परिवार के सभी सदस्य उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के बलबूते पर वित्तीय क्षेत्र के विस्तृत आकाश में हमारे बैंक के सितारे की चमक बढ़ाएँगे।

शुभकामनाओं सहित

Dear Readers

I am Delighted to present this issue of our in-house magazine 'Tarangan' to you. The December quarter of the financial year holds significant importance in the context of banking operations and the overall economic landscape. This quarter is particularly notable as it coincides with the festive season. This year, our bank achieved remarkable growth by offering attractive schemes and benefits to customers during this festive period. To boost retail, agriculture, and MSME loans, as well as loan recovery and third-party products, several campaigns and programs were launched at the levels of the Field General Manager Office, Zones, and Branches. Additionally, new products such as PM-Surya Ghar, Kisan Drone Scheme – Akashdoot, and online savings accounts were introduced in line with the Government of India's initiatives. In this issue of Tarangan, we have not only included banking-related topics but also showcased a variety of literary works contributed by our staff members. Photographs from activities conducted during the December quarter such as Vigilance Awareness Month programs, Town Hall meetings, the Ek Ped Maa Ke Naam initiative, and customer outreach programs have also been featured in this edition.

The continuous improvement in both the quantity and quality of literary submissions from our staff has greatly encouraged the Editorial Board. While these contributions highlight the hidden talents of our employees, the number of participants in literary activities remains relatively low compared to our talented workforce. We hope to see increased participation in the future, with more diverse and insightful submissions across various themes. To ensure diversity, this issue includes a wide range of content, such as articles, stories, travelogues, poems, and accounts of special achievements. The editorial team extends heartfelt gratitude to all the contributors whose creativity and dedication have enriched this edition.

I wish happiness and prosperity to all the staff members and customers of the bank on the advent of New Year and hope that in the last quarter of the financial year, all the members of BOI Star family will make our bank's star shine brighter in the vast sky of the financial sector with the help of their excellent performance.

With best wishes

(मऊ मैत्रा) / (Mou Matra)

Taarangan / Oct.-Dec. 2024 / 5

# UPI: Revolutionizing Digital Payments in India & Its impact on BOI

In the digital era, India has made significant strides in transforming its financial system to be more user-friendly and efficient. One of the most groundbreaking initiatives in this regard is the *Unified Payments Interface* (UPI). Launched in 2016 by the National Payments Corporation of India (NPCI), UPI has revolutionized financial transactions not only in India but also globally. This article explores the history, importance, technical aspects, benefits, and impact of UPI.

## The Evolution of UPI

UPI was developed by NPCI in collaboration with the Reserve Bank of India (RBI) and the Indian Banks' Association (IBA). It was launched on April 11, 2016, by then RBI Governor Dr. Raghuram Rajan. Its primary objective was to steer India toward a *cashless economy*.

Before UPI, users relied on NEFT, RTGS, and IMPS for digital payments, which were often cumbersome and time-consuming. UPI simplified these processes, enabling instant money transfers with just a few clicks.

## How UPI Works

UPI is a platform that integrates multiple banks and allows users to manage various bank accounts through a single application. The key steps involved in UPI operations include:

1. **Virtual Payment Address (VPA):** Users are assigned a UPI ID or Virtual Payment Address linked to their bank account.
2. **Bank Account Linking:** UPI connects the user to their bank account seamlessly.
3. **PIN-Based Transactions:** UPI transactions are secured with a PIN (a 4-6 digit code).



4. **Real-Time Transfers:** UPI facilitates real-time money transfers, making transactions fast and efficient.

## Key Benefits of UPI

1. **Simplicity and Convenience:** UPI has eliminated complex procedures, ensuring easy and quick payments. A smartphone and internet connection are all you need.
2. **Security:** UPI ensures financial data security with a *two-factor authentication system*.
3. **Versatility:** UPI supports bill payments, online shopping, money transfers, and even government services.
4. **Cost-Effective:** UPI transactions incur minimal to no extra charges, making it affordable for everyone.
5. **Time-Saving:** By eliminating the need for lengthy banking procedures, UPI saves valuable time.



## Impact of UPI on Society

1. **Towards a Cashless Economy:** UPI has played a pivotal role in reducing the dependency on cash transactions.
2. **Financial Inclusion in Rural Areas:** UPI has made digital payments accessible to remote and underserved regions.
3. **Boost to Startups and E-Commerce:** UPI has provided small businesses and startups with an easy way to accept digital payments.
4. **Support During the COVID-19 Pandemic:** UPI promoted contactless payments, helping maintain social distancing during the pandemic.

## UPI in Numbers

By 2024, UPI has witnessed phenomenal growth in transaction volume and value. According to NPCI:

- In March 2024, nearly 15 billion transactions were processed via UPI.
- UPI has expanded to over 50 countries, including Nepal, Bhutan, and Singapore.
- Over 50 banks and 10+ applications like Google Pay, PhonePe, and Paytm are integrated with UPI.

## Challenges Faced by UPI

1. **Cybersecurity:** The rise in digital transactions has also increased the risk of cyber fraud.
2. **Access to Technology:** UPI relies on smartphones and internet connectivity, which are still limited in some rural areas.
3. **Language and Literacy Barriers:** Many individuals face challenges due to technical knowledge or language constraints.
4. **Technical Glitches:** Issues like server downtime and transaction failures remain common challenges for UPI platforms.

The Unified Payments Interface (UPI) has significantly impacted the Bank of India (BOI), as it has with other banks, transforming customer banking experiences and operational paradigms.

Here's a comprehensive overview of the impact:-

### 1. Increased Digital Transactions

UPI has led to a surge in digital payments, reducing dependency on cash. For BOI, this has:

- **Enhanced Transaction Volume:** With the ease of transferring money via UPI, more customers now rely on BOI's mobile banking services.
- **Wider Reach:** Even customers in rural areas, where BOI has a strong presence, have adopted UPI for quick and secure transactions.

### 2. Customer Base Expansion

UPI has attracted a younger, tech-savvy demographic to the bank.

- **Onboarding New Customers:** BOI has seen an increase in savings account openings due to UPI-linked accounts.
- **Improved Customer Retention:** UPI's convenience fosters loyalty among existing customers.

### 3. Cost Efficiency

UPI reduces operational costs for BOI:

- **Lower Cash Handling Costs:** Fewer ATM withdrawals and branch visits for cash reduce logistics and maintenance costs.
- **Reduced Paper-Based Processes:** Digital transfers replace cheques and demand drafts, cutting administrative expenses.

### 4. Competitive Advantage

BOI's integration with UPI keeps it competitive in the banking sector:

- **Partnerships:** Collaboration with third-party UPI apps like Google Pay, PhonePe, and Paytm increases the bank's visibility and usability.
- **Innovation Drive:** UPI pushes BOI to innovate further, such as improving its mobile banking app and exploring new fintech collaborations.

### 5. Enhanced Financial Inclusion

UPI has played a pivotal role in bringing unbanked

and underbanked populations into the formal banking system, aligning with BOI's objectives:

- **Microtransactions:** UPI enables small-value transactions, critical for customers in low-income brackets.
- **Government Schemes:** Integration with UPI helps BOI support initiatives like Direct Benefit Transfers (DBT), improving subsidy delivery.

## 6. Data Insights and Analytics

The UPI ecosystem provides BOI with valuable data:

- **Customer Spending Patterns:** Insights into transaction trends help in designing targeted financial products.
- **Fraud Detection:** Advanced analytics help identify and mitigate fraudulent transactions.

## 7. Revenue Growth

While UPI transactions themselves may have lower margins due to low or zero fees, they indirectly boost BOI's revenue by:

- **Increased CASA Deposits:** More transactions lead to higher balances in current and savings accounts.
- **Cross-Selling Opportunities:** UPI users often opt for BOI's additional services like loans, credit cards, and insurance.

## 8. Operational Challenges

Despite its benefits, UPI has brought some challenges for BOI:

- **Increased Server Load:** High transaction volumes demand robust IT infrastructure.
- **Fraud Risks:** Phishing and fraud cases have risen, necessitating stronger cybersecurity measures.
- **Margin Pressure:** The zero-fee structure limits direct revenue from UPI transactions, requiring the bank to monetize in other ways.

## 9. Future Prospects

Looking ahead, UPI is likely to continue shaping BOI's operations:

- **UPI 2.0 and Beyond:** Features like recurring payments, overdraft accounts, and cross-border UPI transactions will expand BOI's service portfolio.
- **Integration with New Technologies:** Combining UPI with AI, blockchain, and IoT will unlock further innovations.

The future of UPI is bright, with continuous updates and innovations such as UPI Lite and UPI Credit. The Indian government and NPCI are working to make UPI more secure, inclusive, and globally adaptable. The integration of technologies like Artificial Intelligence and Machine Learning can enhance UPI's efficiency and security. Awareness campaigns can further promote its usage in rural and underserved areas. The UPI revolution has profoundly influenced the Bank of India, enhancing digital adoption, improving customer experiences, and driving financial inclusion. While challenges like cybersecurity and low margins persist, BOI's active participation in the UPI ecosystem positions it as a forward-looking institution ready to harness the full potential of digital banking. UPI has transformed the Indian financial ecosystem. It is not just a technological achievement but a cornerstone of the Digital India initiative. Its simplicity, security, and accessibility have made it a game-changer in digital payments, both in India and globally. The successful implementation of UPI positions India as a leader in the global digital economy. It is more than a payment system—it is an economic revolution driving India toward self-reliance and modernization.

**Biswajeet Guha**  
Zonal Manager  
Howrah Zone





# कृत्रिम बुद्धिमत्ता: नवाचार की दिशा में एक कदम

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज के दौर में सबसे चर्चित और उभरती हुई तकनीकों में से एक है। यह वर्तमान में तकनीकी नवाचार का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मतलब होता है कृत्रिम तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता। यह मशीनों की उन कार्यों को करने की क्षमता को संदर्भित करता है जिनके लिए आमतौर पर मानवीय बुद्धि की आवश्यकता होती है, जिसमें सीखना, निर्णय लेना और भाषा समझना शामिल है। साथ ही इसके द्वारा इंसानी सोच और तर्क की नकल करके कंप्यूटर और मशीनों को कार्य करने की क्षमता प्रदान की जाती है।

“कृत्रिम बुद्धिमत्ता” शब्द का आविष्कार जॉन मैकार्थी ने किया था, जो एक अमेरिकी कंप्यूटर वैज्ञानिक और संज्ञानात्मक वैज्ञानिक थे, जिन्होंने इस क्षेत्र की स्थापना में आधारभूत भूमिका निभाई। इसका विकास 1950 के दशक में हुआ, लेकिन 21 वीं सदी में इसके द्वारा जीवन के लगभग हर क्षेत्र में बहुत गहरा प्रभाव डाला गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की एक प्रमुख विशेषता विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तर्कसंगत ढंग से कार्य करने की इसकी क्षमता है। इनके द्वारा निर्मित कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम को उन्हीं तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क काम करता है।

पहले जो कार्य असंभव या बहुत कठिन माने जाते थे, वो कार्य इसके मदद से आसानी से किए जा रहे हैं। मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग जैसी तकनीकों ने विशाल डेटा का विश्लेषण करना और उससे महत्वपूर्ण व मूल्यवान जानकारी पाना सहज बना दिया है। मशीन लर्निंग के माध्यम से मशीन डेटा से सीखता है और डीप लर्निंग तकनीकें टेक्स्ट, इमेज और वीडियो सहित बड़ी मात्रा में असंरचित डेटा के विश्लेषण को सक्षम करके इस प्रक्रिया को आसान बना देता है। कृत्रिम

बुद्धिमत्ता ने जीवन के लगभग हर क्षेत्र पर व्यापक प्रभाव डाला है, चाहे वह स्वास्थ्य सेवा हो, शिक्षा, कृषि या फिर सरकारी नीतियां; कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव सभी क्षेत्रों में देखा जा सकता है।

**स्वास्थ्य देखभाल एवं चिकित्सा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का योगदान:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने रोगों की पहचान, निदान और उपचार में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। यह निदान और उपचार विकल्पों को बढ़ाकर स्वास्थ्य प्रणाली को बदल रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिदम पारंपरिक तरीकों की तुलना में तपेदिक तथा मधुमेह रेटिनोपेथी जैसी स्थितियों का पता लगाने हेतु चिकित्सा छवियों का विश्लेषण अधिक सटीक एवं तेजी से कर सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता संचालित उपकरण और सॉफ्टवेयर डॉक्टर को जटिल रोगों का पूर्वानुमान लगाने में मदद करते हैं। साथ ही, इसके सहयोग से रोबोटिक सर्जरी, जीनोमिक्स और टेलीमेडिसिन जैसी तकनीकों ने चिकित्सा जगत में नवाचार को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सिस्टम न केवल सटीक निदान करते हैं, बल्कि इलाज की प्रभावी योजनाएँ भी सुझाते हैं, जिससे चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता और पहुंच में सुधार हो रहा है।

**व्यापार एवं उद्योग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग:** व्यापार और उद्योग में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने नवाचार की एक नई लहर शुरू की है। उत्पादन प्रक्रियाओं में स्वचालन और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग ने उद्योगों की उत्पादकता और दक्षता में वृद्धि की है। साथ ही, उपभोक्ता व्यवहार के विश्लेषण और बाजार की प्रवृत्तियों को समझने में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे कंपनियां अपने उत्पादों और सेवाओं को और बेहतर तरीके से ग्राहकों तक पहुंचाने में सक्षम हो रही हैं। भारत का ई-कॉमर्स क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण संभव

हो पाया है। मशीन लर्निंग, अनुकूलित उत्पाद अनुशंसाओं के माध्यम से व्यक्तगत खरीदारी को बढ़ाता है, जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता पूर्वानुमान लगाकर और लॉजिस्टिक्स को स्वचालित करके आपूर्ति श्रृंखलाओं को अनुकूलित करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता संचालित मार्केटिंग लक्षित विज्ञापनों के साथ ग्राहक के साथ जुड़ाव को बढ़ाती है, रूपांतरण दरों और ब्रांड निष्ठा में सुधार करती है।

**शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका :** कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा के क्षेत्र में भी क्रांति ला दी है। शिक्षा के क्षेत्र में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षण और सीखने के तरीके को नया रूप दिया है। स्मार्ट क्लासरूम, आभासी शिक्षक, और व्यक्तिगत शिक्षा योजनाओं के माध्यम से छात्रों को बेहतर शिक्षण अनुभव प्रदान किया जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित एप्लिकेशन छात्रों की प्रगति का विश्लेषण करते हैं और उनकी क्षमताओं के अनुसार शिक्षण सामग्री प्रदान करते हैं। इससे छात्रों को उनकी ज़रूरतों के अनुसार सीखने का मौका मिलता है।

**कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का योगदान:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों का उपयोग किसान उत्पादन बढ़ाने, जलवायु परिवर्तन से निपटने, और फसल रोगों की पहचान में कर रहे हैं। इसके माध्यम से किसानों को बेहतर फैसले लेने में मदद मिलती है और उनकी आय में भी वृद्धि हो रही है। साथ ही, कृषि में खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण आय बढ़ाने के लिए यह महत्वपूर्ण है। परिशुद्ध कृषि में उपग्रह चित्रों और इंटरनेट ऑफ थिंग्स डेटा का विश्लेषण करने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है, जिससे फसल प्रबंधन तथा सिंचाई को अनुकूलित किया जाता है। यह कीटों के प्रकोप का पूर्वानुमान भी लगाता है और फसल की उपज का पूर्वानुमान भी लगाता है, जिससे बेहतर योजना बनती है तथा संसाधनों की बर्बादी कम होती है।

**बैंकिंग और वित्त क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग:** वित्तीय संस्थाएँ डेटा प्रविष्टि और अनुपालन जाँच जैसे दोहराव वाले कार्यों को स्वचालित करने के लिए रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन का तेजी से उपयोग कर रही हैं, जिससे परिचालन लागत में 25% तक की कमी आ रही है। कृत्रिम

बुद्धिमत्ता एल्गोरिदम धोखाधड़ी गतिविधियों का पता लगाने के लिए लेनदेन पैटर्न का विश्लेषण करते हैं। इसी तरह, कृत्रिम बुद्धिमत्ता चैटबॉट 24/7 ग्राहक सहायता प्रदान करते हैं।

**सार्वजनिक सेवाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का योगदान:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग सार्वजनिक सेवाओं के क्षेत्र में भी हो रहा है। सरकारी योजनाओं को लागू करने में, भ्रष्टाचार की रोकथाम और सेवा वितरण में पारदर्शिता लाने में यह मदद कर रहा है। उदाहरणस्वरूप, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित डेटा एनालिटिक्स का उपयोग विभिन्न सरकारी नीतियों की समीक्षा और सुधार में किया जा रहा है।

यद्यपि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के ढेर सारे फायदे हैं, लेकिन इसके साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को पूरी तरह से अपनाने के लिए निम्नलिखित बाधाओं पर ध्यान देना आवश्यक है:

**तकनीकी बुनियादी ढाँचे की कमी :** कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सफलतापूर्वक उपयोग करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले तकनीकी बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता होती है, जिसमें क्लाउड कंप्यूटिंग, तेजी से इंटरनेट कनेक्टिविटी, डेटा सेंटर और उच्च शक्ति वाले कंप्यूटर शामिल हैं। भारत में अभी भी इसके अनुप्रयोगों को कुशलतापूर्वक बढ़ाने हेतु आवश्यक व्यापक सुविधाओं की कमी एक बड़ी चुनौती है।

**कुशल कार्यबल/ मानव संसाधन की कमी:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित मानव संसाधन की आवश्यकता होती है। भारत में इस क्षेत्र में काम करने वाले कुशल इंजीनियरों और वैज्ञानिकों की संख्या अभी भी सीमित है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता में शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ाने के प्रयासों के बावजूद, कुशल पेशेवरों की माँग आपूर्ति से अधिक बनी हुई है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक को अपनाने के लिए इस क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने की आवश्यकता है। यह कमी विभिन्न क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता समाधानों को नया रूप देने और लागू करने की क्षमता को सीमित करती है।

**निजता और डेटा सुरक्षा:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर डेटा एकत्रित करने और उसका विश्लेषण करने में होता है। इससे नागरिकों की

गोपनीयता और डेटा सुरक्षा के मुद्दे सामने आते हैं। भारत में डेटा सुरक्षा के लिए एक सख्त कानूनी ढांचे की आवश्यकता है, ताकि नागरिकों की निजी जानकारी सुरक्षित रह सके।

**नैतिक और सामाजिक मुद्दे:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग नैतिक सवाल भी खड़े करता है, जैसे कि मशीनों द्वारा नौकरी छिने का खतरा, निर्णय लेने में मशीनों की निष्पक्षता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के द्वारा लिए गए निर्णयों की जवाबदेही। इन मुद्दों को सुलझाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास के साथ-साथ एक मजबूत नैतिक ढांचे की आवश्यकता है

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने नवाचार के क्षेत्र में एक नई क्रांति की शुरुआत की है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता न केवल तकनीकी क्रांति का हिस्सा है, बल्कि आर्थिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसके कारण स्वास्थ्य,

शिक्षा, व्यापार, और तकनीक के क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं। हालांकि, इसके साथ आने वाली चुनौतियों का समाधान करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। सही दिशा में कदम उठाने और इसके उपयोग को नैतिक और सामाजिक रूप से जिम्मेदार तरीके से संचालित करने से, कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव समाज के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन सकती है, जो हमारी प्रगति और विकास को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी।

**रवि चंद्र धारिया**

उप-आंचलिक प्रबंधक

सिवान अंचल



## My Bed Room Friend: The Mirror

One night, while preparing for bed, Alyssa heard a strange voice. Looking around her room, she realized the mirror was speaking!

"Hello, Alyssa," it said softly.

Startled but realizing she was alone, Alyssa hesitantly whispered back, "Hello."

The mirror reassured her, "Don't be afraid, Alyssa. I'm just a friendly mirror. I've been watching you, and I think you're a very cute and special girl." A conversation began.

Later, Alyssa asked the mirror its name.

"Actually, I don't have one," it replied. "You can call me anything."

"Alyssa, pleased with this, named her new friend "Shally." Shally was delighted.

As their friendship deepened, Alyssa asked, "How can you talk?"

Shally smiled and explained, "A kind wizard enchanted me, giving me the gift of speech to bring joy to others."

Alyssa was amazed. She realized that even the most ordinary things can hold extraordinary secrets, and from that day on, she viewed the world with newfound wonder, always expecting the unexpected. Alyssa and Shally became lifelong friends.

**Alyssa Jena, IV Class Student**

D/O Purushottam Jena

Zonal Manager Barasat Zone





## एमएसएमई ऋण - एक परिचय

एमएसएमई ऋण अर्थात् सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम ऋण, छोटे और मध्यम आकार के व्यवसायों के लिए ऋण हैं। ये व्यवसाय आमतौर पर 50 से कम कर्मचारियों वाले व्यवसाय होते हैं। एमएसएमई ऋण व्यवसायों को अपनी परिचालन जरूरतों को पूरा करने, विस्तार करने या नए उपकरण या संपत्ति खरीदने में मदद कर सकते हैं। छोटे उद्यम ही अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते हैं। ये वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं का सामना करने में सक्षम होते हैं और अधिक रोजगारों का सृजन करते हैं। छोटे और मझोले उद्यम आर्थिक वृद्धि के लिए एक इंजन के रूप में प्रतिनिधित्व करते हुए नवाचार को बढ़ावा देते हैं। एक मजबूत एसएमई क्षेत्र जनसंख्या के बड़े भाग को निम्न वर्ग से उठाकर मध्यम वर्ग में ले जाने की क्षमता रखता है एवं आर्थिक असमानताओं को कम करते हुए समवेशी विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

### भारत में एमएसएमई ऋण

भारत में एमएसएमई ऋण महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एमएसएमई का भारत के जीडीपी में लगभग 30% योगदान है, भारत के कुल विनिर्माण उत्पादन में एमएसएमई की हिस्सेदारी लगभग 45% है और वे रोजगार उपलब्ध करवाने में इनकी हिस्सेदारी लगभग 60% हैं। रूइटर्स के अनुसार सितंबर 2024 तक भारत में एमएसएमई में 12.6 करोड़ लोगों को राजगार प्राप्त है जो पिछले वर्ष के मुकाबले 1 करोड़ अधिक है। इससे एमएसएमई की रोजगार सृजन क्षमता स्पष्ट हो जाती है। भारत सरकार एमएसएमई को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं और कार्यक्रम चला रही है। इनमें से कई योजनाएं एमएसएमई ऋण प्रदान करती हैं।

### बैंक में एमएसएमई ऋण

भारत में, एमएसएमई ऋण आमतौर पर बैंकों द्वारा प्रदान किए जाते हैं। बैंक विभिन्न प्रकार के एमएसएमई ऋण प्रदान करते हैं, जिनमें शामिल हैं:

**कार्यशील पूंजी (वर्किंग कैपिटल) ऋण:** ये ऋण



व्यवसायों को अपनी दैनिक परिचालन जरूरतों को पूरा करने में मदद करते हैं, जैसे कि कर्मचारियों की मजदूरी, माल की खरीद और बिक्री से पहले नकदी प्रवाह।

**निवेश (इनवेस्टमेंट) ऋण:** ये ऋण व्यवसायों को विस्तार करने या नए उपकरण या संपत्ति खरीदने में मदद करते हैं।

**व्यापार वित्तपोषण (ट्रेड फाइनेंस) ऋण:** ये ऋण व्यवसायों को अपने ग्राहकों को माल या सेवाएं बेचने के लिए क्रेडिट प्रदान करने में मदद करते हैं।

### एमएसएमई ऋण के लिए पात्रता

एमएसएमई ऋण के लिए पात्रता बैंक से बैंक में भिन्न होती है। हालांकि, आमतौर पर, एमएसएमई ऋण के लिए पात्र होने के लिए, एक व्यवसाय को निम्नलिखित आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए:

एक लघु या मध्यम आकार का व्यवसायी होना चाहिए।  
आपके पास एक वैध व्यवसाय पंजीकरण होना चाहिए।  
आपके पास पिछले कुछ वर्षों की वित्तीय विवरणियाँ होनी चाहिए।

आपके पास पर्याप्त आय या संपत्ति होनी चाहिए, जो ऋण की गारंटी दे सके।

### एमएसएमई ऋण के लिए आवेदन कैसे करें

एमएसएमई ऋण के लिए आवेदन करने के लिए, आपको बैंक में आवेदन पत्र भरना होगा। आवेदन पत्र में

आपके व्यवसाय के बारे में जानकारी, आपके वित्तीय विवरण और आपके द्वारा मांगे जा रहे ऋण की राशि शामिल होगी।

बैंक आपके आवेदन की समीक्षा करेगा और ऋण प्रदान करने या न करने का निर्णय लेगा। यदि बैंक आपको ऋण प्रदान करता है, तो आपको ऋण समझौते पर हस्ताक्षर करने होंगे।

### एमएसएमई ऋण के लाभ

एमएसएमई ऋण व्यवसायों के लिए कई लाभ प्रदान कर सकते हैं। इनमें शामिल हैं:

वे व्यवसायों को अपनी परिचालन जरूरतों को पूरा करने, विस्तार करने या नए उपकरण या संपत्ति खरीदने में मदद कर सकते हैं।

वे व्यवसायों को अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

वे व्यवसायों को रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद कर सकते हैं।

### एमएसएमई ऋण के नुकसान

एमएसएमई ऋण के कुछ नुकसान भी हैं, इनमें शामिल हैं:

वे महंगे हो सकते हैं।

उन्हें चुकाने में समय लग सकता है।

यदि व्यवसाय विफल हो जाता है, तो ऋण को वापस चुकाने की जिम्मेदारी व्यवसाय के मालिकों पर पड़ेगी।

### निष्कर्ष

एमएसएमई ऋण ऐसे महत्वपूर्ण वित्तीय उपकरण हो सकते हैं जो व्यवसायों को उनकी परिचालन जरूरतों को पूरा करने, विस्तार करने या नए उपकरण या आस्तियां खरीदने में मदद कर सकते हैं। हालांकि, एमएसएमई ऋण लेने से पहले, व्यवसायों को ऋण की लागत और जोखिमों को समझना चाहिए।

अर्चितप्रभु चिमलकर

लिपिक

गोवा आंचलिक कार्यालय



## बैंक ऑफ इंडिया - 119 वर्षों का अस्तित्व

119 वर्षों का अस्तित्व,  
रिश्तों के धरातल पर व्यावसायिक गतित्व।  
आसान नहीं होता है,  
हरेक परिवर्तन का साक्षी बनना,  
राष्ट्रीयकरण हो या उदारीकरण।  
उत्कृष्टता है लक्ष्य अपना।।

अनिश्चिताओं के हमने देखे दौर,  
मुश्किलों में भी थामे रखी रिश्तों की डोर।  
गढ़ी हमने अनगिनत परिकल्पनाएँ,  
बेमिसाल उत्पाद सभी क्षेत्रों के लिए बनाए।।

उस दौर में भी बढ़ाते रहे कदम,  
जब कई संस्थान मिले, सिमटे हुए खतम।  
उठते- संभलते निरंतर बने रहे हैं गतिमान,  
समवेशी सतत वृद्धि के बने हम प्रतिमान।।

मूल्यवान कर्मचारी एवं समर्पित ग्राहक आधार,  
क्षेत्र एवं कारोबार का कर रहे निरंतर विस्तार।  
रिश्तों की जमापूँजी, विशिष्ट मानकों का ऐतबार,  
सन्निहित है इसमें अमर्त्य रहने का आधार।।

ओम प्रकाश चौधरी

आंचलिक प्रबंधक

पटना अंचल



## बैंकिंग सेवा क्षेत्र की धुरी : ग्राहक सेवा

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने एक संबोधन में कहा था - हमारे परिसर में ग्राहक सर्वाधिक महत्वपूर्ण आगंतुक है, वह हम पर आश्रित नहीं है, हम उस पर आश्रित हैं। वह हमारे कार्य में बाधा नहीं है, वह हमारे व्यापार के लिए एक बाहरी व्यक्ति नहीं है, वह इसका हिस्सा है। हम उसे सेवा देकर उसे कोई लाभ नहीं दे रहे हैं, बल्कि हमें ऐसा करने का अवसर देकर वह हमें लाभ दे रहा है।

ग्राहक के संबंध में महात्मा गांधी जी द्वारा कहा गया उपरोक्त संबोधन आज के संदर्भ में बैंकिंग के क्षेत्र में शत-प्रतिशत सही है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में जो निरंतर आगे बढ़ा वही अपना वजूद कायम रख सका और बैंक भी इससे अछूते नहीं हैं। आज मनुष्य के पास सबसे अधिक अभाव समय का है। प्रत्येक व्यक्ति अपना कार्य जल्दी से जल्दी निपटाना चाहता है और सर्वोत्तम सेवा की अपेक्षा भी रखता है। आज के युग में आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग और उत्तम ग्राहक सेवा ही नित परिवर्तनशील बैंकिंग के दो मुख्य आधार हैं जिन पर बैंक की प्रगति निर्भर करती है। वैसे तो प्रत्येक संस्था ग्राहक की संतुष्टि को सर्वोच्च स्थान देती है, लेकिन हमारे बैंक का तो सूत्र वाक्य ही है- **रिशतों की जमापूँजी** अर्थात् हमारे बैंक की तो नींव ही सेवा में संतुष्टि के साथ ग्राहकों से रिश्ते मजबूत बनाने पर आधारित हैं, इसलिए ग्राहक सेवा का स्तर इतना ऊंचा होना चाहिए कि कार्य पूरा होने पर ग्राहक प्रसन्न होकर ही बैंक से बाहर जाए। बैंक की लाभप्रदता संपूर्ण रूप से निर्भर करती है, ग्राहक की अपेक्षाओं पर खरा उतर कर तथा उसकी सेवा के बदले कमीशन, ब्याज, सर्विस टैक्स आदि प्राप्त करने पर। यदि बैंक को अपने शिखर पर पहुँचना है तो ग्राहक को ही केंद्र में रखकर अपनी नीतियाँ बनानी होंगी।

बैंकों के राष्ट्रीयकरण से पूर्व की स्थिति बिलकुल अलग थी। यह कहना गलत नहीं होगा कि तब बैंक अमीर वर्ग के लिए ही थे, आम आदमी की तो बैंक तक पहुँच ही नहीं थी लेकिन सन् 1969 में 14 बैंकों तथा उसके पश्चात सन 1980

में 06 बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात आम जन के हृदय में भी बैंकों के प्रति विश्वास का बीज रोपित हुआ और धीरे-धीरे यह पनपने लगा। पिछले कुछ वर्षों में तो अभिजात्य और मध्यम वर्ग के साथ-साथ जन-धन खातों की कुछ ऐसी हवा चली कि आम जन का जीवन और उनकी जीवनशैली में बैंकों का एक बड़ा प्रभाव है। लेकिन इसके साथ ही आज के ग्राहक चाहें वे शहरी क्षेत्र के हो या ग्रामीण क्षेत्र के सभी अपने अधिकारों के प्रति सजग एवं जागरूक हैं तथा बैंकिंग की भी अच्छी जानकारी रखते हैं। इसलिए ग्राहकों की अपेक्षाएं भी अब पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है और ऐसे समय में जब सरकारी बैंकों के साथ प्राइवेट बैंक भी बड़ी संख्या में हैं, ग्राहक बैंकों के चयन के लिए स्वतंत्र हैं, ना कि ग्राहकों के चयन के लिए बैंक। इसका सीधा सा तात्पर्य यह ही है कि बेहतर ग्राहक सेवा और ग्राहक की संतुष्टि ही बैंक की उन्नति का एकमात्र विकल्प है।

बैंक में हमारे पास कई तरह के ग्राहक आते हैं, जिसमें सबसे पहला स्थान है हमारे स्थायी ग्राहकों का, ये वह ग्राहक





है जिन्हें अपने बैंक पर विश्वास है कि उनका कार्य सही तरह से निष्पादित हो जाएगा, वे बैंक के कार्य से संतुष्ट होते हैं। किंतु ध्यान हमें इनका भी अवश्य रखना होगा क्योंकि यह तो बैंक के लिए निःशुल्क विज्ञापन की तरह है। एक संतुष्ट ग्राहक बैंक में कई अन्य ग्राहकों को न केवल आकर्षित करता है बल्कि बैंक की साख को भी बढ़ाता है। इसके विपरीत दूसरे वे ग्राहक होते हैं जो बैंक में अंदर आते ही बैंक की, बैंक के इंफ्रास्ट्रक्चर की, कर्मचारियों की आलोचना करना आरंभ कर देते हैं। ये चाहते हैं कि सबसे पहले इनका काम ही किया जाए। ऐसे ग्राहक बहुत संवेदनशील होते हैं। जोर से बोलना, कमियां निकालना, बात-बात पर शिकायत करना जैसे इनकी आदत ही होती है। हमें इनका ध्यान तो स्थायी ग्राहकों से भी अधिक रखना होगा। अत्यंत शांति एवं धैर्यपूर्वक इनकी बात को सुनना और उसका समाधान करना और अंत में इन्हें बैंक का ग्राहक होने के लिए धन्यवाद भी देना आवश्यक है। इनको संतुष्ट रखने का यही उपाय है।

रहीम जी का एक प्रसिद्ध दोहा है। -

**रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय।**

**टूटे तो फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ परी जाय ॥**

जिस प्रकार एक संतुष्ट ग्राहक दस भावी ग्राहकों को बैंक में ला सकता है। उसी प्रकार एक असंतुष्ट ग्राहक दस भावी ग्राहकों को भड़का भी सकता है। इसलिए बैंक शाखा के हम सभी ग्राहक सेवा सहयोगियों को अपने सभी ग्राहकों से शालीनतापूर्वक विनम्र व्यवहार करना चाहिए। बैंक के सभी उत्पादों व सेवा संबंधी सही जानकारी भी पूर्ण रूप से हम ग्राहक सेवा सहयोगियों को होनी चाहिए। क्योंकि भ्रामक जानकारी व्यापार की गति में व्यवधान उत्पन्न करती है, अविश्वास को बढ़ाती है। हमारे हिन्दी भाषी क्षेत्रों में यदि ग्राहक की भाषा हिन्दी में ही ग्राहक को जानकारी दी जा सके तो यह तो सोने पर सुहागा होगा। एक-सी भाषा का प्रयोग ग्राहक से घनिष्ठता तथा विश्वास को कई गुणा बढ़ा देता है और बैंक का ग्राहक के साथ एक अटूट बंधन बन जाता है। ग्राहक हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है, हेनरी फोर्ड की इन पक्तियों से आप समझ सकते हैं-

**वेतन का भुगतान करने वाला नियोजक नहीं है, वह तो केवल मुद्रा को संभालने वाला है। यह तो ग्राहक है जो वेतन का भुगतान करता है।**

ग्राहक निरंतर जागरूक बनता जा रहा है। किसी भी व्यावसायिक संस्था के लिए, ग्राहकों को बनाना जितना आवश्यक होता है, उससे ज्यादा ज़रूरी अपने ग्राहकों को अपने साथ जोड़े रखना होता है। बैंकों के पास दीर्घ अवधि तक अपने ग्राहकों को बनाए रखने के लिए एक ही विकल्प होता है और वह है कि अपने ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार उत्पाद व सेवाएं प्रदान करना।

यदि हम ग्राहक सेवा पर नज़र डालें तो आज ग्राहकों में बीओआई मोबाइल बैंकिंग, नेट बैंकिंग व प्लास्टिक बैंकिंग का प्रचलन है। हर व्यक्ति बैंकों द्वारा उपलब्ध करवायी जा रही इन सुविधाओं का लाभ उठा रहा है। ग्राहक के समय व ऊर्जा की बचत हो रही है। वह कम समय में घर अथवा कार्यस्थल पर बैठे एक बटन के क्लिक से ही बैंकिंग कर सकता है। एक व्यापारी बैंक में आए बगैर ही अपना काम करते-करते ही बीओआई मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से खाता खुलवा सकता है। बैंकिंग का परिदृश्य ही बदल गया है। आज बैंकों को ग्राहक की आवश्यकता एवं इच्छा के अनुसार उत्पाद व सेवाएं देनी होंगी, तभी वह ग्राहक को पूर्ण रूप से संतुष्ट कर पाएंगे।

यह बात बिल्कुल सही है कि किसी भी संगठन की सफलता उसके द्वारा प्रदान की जा रही ग्राहक सेवा पर ही निर्भर करती है। बेहतर ग्राहक सेवा ही ग्राहक की संतुष्टि का मूल मंत्र है। जब हम अपने प्यारे बैंक के 120वें स्थापना वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं, तो हमारी जिम्मेदारी और बढ़ गयी है। स्थायी ग्राहक बैंक के साथ बने रहें, वर्तमान ग्राहक सतत बैंक से जुड़े रहें और हम सबके सकारात्मक प्रयास जारी रहें, जिससे कि निरंतर हमारे बैंक से नए ग्राहक जुड़ते रहें। तब ही हमारा बैंक प्रगति की राह पर नित नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर हो पाएगा।

**प्रेम रंजन**

**ग्राहक सेवा सहयोगी**

**राधानगर शाखा, भागलपुर अंचल**



# CORRUPTION FREE INDIA FOR A DEVELOPED NATION

The term “corruption” comes from the Latin word “corruptio” which means “moral decay, wicked behaviour, or rottenness”. Vast literature dedicated to corruption defines it differently.

Robert Klitgaard explains the root cause of corruption in a simple yet elegant formula,  
Corruption = Monopoly Power + Discretion – Accountability

In simple words, corruption equals monopoly plus discretion minus accountability. Wherever these conditions are present, be it in the public or private sector, corruption tends to grow. It must be recognized that corruption is all pervasive in India and covers public and private governance systems. However, it is the public governance system that requires our attention here since the amounts spent in this system and its impact on the society are huge and it affects the poor much more than the private governance systems. The returns on reforming the public governance systems are very high. Fortunately, the private governance systems have market competition as a deterrent force to keep errant industrialists under check. In public governance systems which are monopolistic, there is no such force.

Corruption, embezzlement, fraud, these are the characteristics that exist everywhere. It is regrettably the way human nature functions, whether we like it or not. What successful economies do is keep it to a minimum level. But if we look at India, corruption is at full swing. There is hardly a day on which we don't find news regarding corruption and corrupt officials in a newspaper. Corruption in India, as at international level, takes various forms starting from bribery. Political and bureaucratic corruption in India is a



major concern. **Transparency International** in India found that more than 45% of Indians have the first hand experience of paying bribes to get jobs done in public offices successfully. A report on bribery in India published by **Trace International** states that 91% of the bribes were demanded by govt. officials, 77% of the bribes demanded were for avoiding harm rather than getting any advantage. Of these 51% were for timely delivery of services to which individual was already entitled e.g. clearing customs or getting a telephone connection. As formulated by a recent OECD/ DAC paper (2006): “Corruption is typically the outcome of a dysfunctional governance system. Most commonly, corruption is defined as the “use of public office for private gain”, or for the gain of particular groups (for example, a political party or an informal patronage network).” As corruption occurs due to bad governance, the question remains, if good governance benefits the population and corruption causes suffering, why people participate in corrupt behavior then?

In India, the epidemic of corruption is spreading rapidly in every field and department. Contractors and builders are constructing weak and low standard roads, bridges and houses. Students are engaged in mass copying. Teachers and examining

bodies are indulged in leaking out question papers, doctors prescribe unnecessary medicines and traders are engaged in overcharging, adulteration and under weighing. Government officials take bribe for doing or sanctioning any work or contracts. Scams in banks, financial institutions, sports, defense department, religious places, and government projects are the order of the day. If we see, no sector of the society is corruption free.

A study of 160 small companies in Bangalore, Mumbai and Ahmedabad has showed that 30% of these companies paid bribes of at least Rs. 5,000 per month to a plethora of government inspectors. A study by ASSOCHAM has said that 40% of the price of electricity in India is due to theft and corruption. A study by EXIM Bank has showed that the so-called "transaction cost", a polite term for bribes, raises the cost of exported goods by as much as 25%. Washington-based Global Financial Integrity, a think tank, recently released a report that India lost a staggering US\$ 462 billion in illicit financial flows abroad due to tax evasion, crime, and corruption, post-independence.

Garibi Hatao, the famous slogan introduced by Mrs. Indira Gandhi, has just remained rhetoric even after forty years. Dr. Manmohan Singh's dream of "Inclusive Growth" has not gained momentum, thanks to our corrupt citizens. This is the sorry state of affairs that we have come to in the last sixty years after independence. The opinion of most common people I have talked to is that it is impossible to live in India unless you submit to the regime of corruption. Of course, the rich, the powerful and the elite do not agree with this since they substitute nepotism for corruption, or pay bribes through service agents.

*"From an institutional perspective, corruption arises where public officials have wide authority, little accountability, and perverse incentives. This means the more activities public officials control or regulate; the more opportunities exist for*

*corruption. Furthermore, lower the probability of detection and punishment, greater the risk that corruption will take place. In addition, the lower the salaries, the rewards for performance, the security of employment, and the professionalism in public service, the greater the incentives for public officials to pursue self-serving rather than public-serving ends."* A report by **CDG (Center for Democracy and Governance), Feb. 2009**  
**Consequences of Corruption for India**

Whether it is India or any other country, corruption is a bane for every nation. Corruption is anti-social, anti-poor, anti-growth, anti-investment and inequitable. Cost of corruption for a nation is very high. It has numeral consequences for a nation. Visible consequences of corruption are mentioned below:

- i) It depletes democratic values and good governance. Corruption in elections and legislative bodies reduces accountability and representation in policymaking
- ii) Corruption in judiciary suspends rule of law
- iii) Corruption in public administration hinders equal provision of services
- iv) Officials are hired or promoted without regard to performance
- v) Corruption generates distortions and inefficiency and adversely hit the economic development
- vi) Corruption raises the cost of doing business. Officials intentionally promote certain conditions to ensure that they get bribes, through delays and unnecessary requirements.
- vii) Corruption also generates economic distortions in public sector by diverting public investment away from education into capital projects where bribes and kickbacks are plenty. Officials increase the technical complexity of public sector projects to conceal such dealings, thus further distorting investment.
- viii) Corruption lowers compliance with



construction, environmental, or other regulations; reduces quality of government services and infrastructure; and increases budgetary pressures on government, thus deters investment and reduces economic growth. **World Development Report 1997**, "The State in Changing World" reveals that investment drops off most in countries with higher corruption levels.

- ix) Corruption hinders human development by limiting access to basic social services and by increasing their delivery cost.
- x) Corruption has led to neglect of social sector on the ground that quality of human resources is very poor in India. Education and health opportunities are very limited due to corruption which affects quality of life, productivity, income, competitiveness, innovativeness and poverty reduction in India.
- xi) Due to corruption, we are lagging behind almost in every field- sports, inventions, health, medicine, research, education, economy, defense, infrastructure, technology and so on.
- xii) Various packages, reservations and compensations for poor, minorities and backward communities announced by government from time to time don't reach to them due to corruption.
- xiii) Ineligible and incapable candidates are selected for various important positions with the power of money. Corrupt officials offer jobs to unskilled and incapable candidates by taking bribe. Due to lack of good opportunities in own country, many creative and talented natives go to serve other nations.
- xiv) Corruption leads to injustice. Injustice gives birth to crimes and anti-social activities. Injustice resulting from corruption e.g. government announces various schemes and help packages for farmers but most of the time

they not reach to the farmers due to corrupt administration. This leads to farmer suicides.

### How to Fight against Corruption

Recently, corruption is being addressed by financial institutions, government agencies, bilateral donors, international organisations, non-governmental organisations (NGOs) and development professionals due to its adverse impacts on human development. Despite countless policy diagnoses, public campaigns to raise awareness, and institutional and legal reforms to improve public administration, it is observed that it continues to flourish. Corruption needs to be fought on multiple fronts. Following measures can be helpful: a) Integrated approach of government, civil society and business firms. b) Strict laws and; strict and exemplary punishments. c) Quick and early disposal of cases of corruption. d) Electoral reforms e) Value enriched education to people to make them responsible and corruption free f) Every government office must disseminate information to general public where they can report the bribery cases. Government should keep the identity of the complainant confidential/secret) Anonymous complaint boxes in each government office to encourage general public to complain against corrupt officials without any fear.

Why is combating corruption so important at this stage? This is the first time in the history of India in the last 300 years that we have received some recognition from the world. This is the first time in this period of 300 years that Indians have moved confidently towards economic progress and have created a hope that we may indeed solve the problem of poverty in India. This is the first time that foreigners have shown an interest in India as an investment destination. Our software industry has become a world-leader and is expected to grow to US\$ 300 billion in the next 10 years. That means most Fortune 2000 corporations will do business

with Indian software firms and visit India often. We can conclude that Corruption is a greatest single bane of our society today. It is such an evil that destroys a system in such a way that we are left with valueless society, lopsided economic development and dysfunctional legal framework. It swallows a transparent and prosperous social, political and economic system. Though every single citizen of India wishes to get rid of it, but it is not as easy as it seems to be. It is a national dream to make our nation corruption free. But how is it possible? As I mentioned earlier that most important factor responsible for corruption is our own nature. So first of all we must be strong enough with high morale to fight this evil. A value based education is must to make ourselves ethically and morally robust. Further, to curb this menace, it must first be thoroughly diagnosed and then requires strong collective efforts from different sectors of society. Role of general public is utmost important. It is only when public supports leader like Anna Hazare, Arvind Kejriwal, Bhagwant Mann that government is compelled to ensure transparency and accountability in administration. Be a revolutionary for a right cause. The cause is to fulfill the national dream of Corruption free India. It is our own responsibility to turn the dream into reality.

Find reality in the words of **Dr. A.P.J. Abdul Kalam,**

*"If a country is to be corruption free and become a nation of beautiful minds, I strongly feel there are three key societal members who can make a difference. They are the father, the mother and the teacher."*

**Barun Kumar,**  
Chief Manager (Siliguri ZO)  
Siliguri Zone



## स्थानान्तरण

बदलाव से सब लोग डरे,  
स्थानान्तरण से तो मना करें।

स्थानान्तरण का शब्द ही ऐसा,  
भयकर पीड़ाकर कोई मातम जैसा,

किन्तु, वह तो है आवश्यक अंग जीवन का,  
विकासपट खोल दे सब के मन का,

नयी जगह, नयी नज़र,  
नया माहौल, नया शहर,

लोग नए है नयी है भाषा,  
नए वेश की नयी परिभाषा,

कर्मस्थान के नए सहारे,  
लगते है मेरे ही नभ के तारे,

बदला सब कुछ, पर कुछ नहीं बदला,  
गौर से देखो तो, वही जमीं है वही सितारे,

बदलाव से सब लोग डरे,  
स्थानान्तरण से तो मना करे।

**दीपक बी. रावल**  
उप आंचलिक प्रबन्धक  
सूरत अंचल, सूरत



## घनीभूत होते शहरों का पर्यावरण

देश-दुनिया की आबादी नित्य प्रति दिन बढ़ती जा रही है। जंगलों-गुफाओं में रहने वाले कुछ लोगों को छोड़ कर धरती पर रहने वाले लोग या तो गाँव में रहते हैं या शहर में। शहरों में लोग पहले से बसे हुए हैं ही, गाँव के लोगों का भी शहर की ओर पलायन बढ़ता जा रहा है। गाँव के अधिकतर संपन्न लोगों का शहर में भी निवास बना होता है। ग्रामीणों को बैंकिंग सेवाएँ भले गाँव में मिल जाती हैं, मगर कार्यालय या न्यायालय के कामों के लिए उन्हें शहर जाना पड़ता है। ग्रामीणों को मजदूरी के लिए भी शहर जाना पड़ता है। अर्थात् गाँवों में रहने वाले बहुत सारे लोगों के कारण भी शहरों का घनत्व प्रभावित हो रहा है।

उद्योगों की स्थापना हो या शिक्षण संस्थानों की, सरकारी कार्यालय हों या निजी प्रतिष्ठान - सभी शहरों में ही स्थापित होना चाहते हैं। बढ़ी हुई आबादी की सुख-सुविधाओं के लिए तरह-तरह की आवश्यकताएँ सामने आती हैं। आवास, भोजन, व्यवसाय से जुड़ी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हजारों लोग लगे हुए हैं। इनमें कुछ लोग शहर में बसे हुए हैं, मगर अधिकतर लोग बाहर से आते हैं।

कहीं जाना हो तो यातायात के साधन चाहिए। शहर में इसके लिए रिक्शा, ऑटोरिक्शा, टैक्सी, बस, मिनी बस, आदि भाड़ा के उपलब्ध साधनों के अतिरिक्त निजी साइकिल, स्कूटर, बाईक, कार आदि चलते हैं। निजी वाहनों में कार को छोड़ कर अन्य वाहनों को चलाने के लिए अतिरिक्त आदमी की आवश्यकता नहीं पड़ती है। लेकिन भाड़ा के सभी बड़े वाहनों में चालक और उप-चालक होते हैं। वे सभी शहर में रहते हैं या आसपास से आकर देर रात तक शहर को बोझिल किए रहते हैं।

कहने को तो भोजन एक शब्द है, लेकिन इसके लिए तरह-तरह की जटिलताओं से गुजरना पड़ता है और तरह-तरह की व्यवस्थाएँ करनी पड़ती हैं। विभिन्न प्रकार के अनाज, दाल, मशाला, चीनी, चाय, बेकरी और कन्फेक्शनरी के सामान आदि का उत्पादन, व्यापार और बिक्री की व्यवस्था

में हजारों लोग लगे हुए हैं। सब्जी, फल, दूध, चाय, मिठाई, होटल आदि से जुड़े लोगों की संख्या भी हजारों में है। विभिन्न प्रकार के वाहनों से जुड़े लोगों की संख्या भी कम नहीं है। इन लोगों के कारण भी शहर का घनत्व प्रभावित होता है।

इन परिस्थितियों के कारण शहर में लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। इससे शहर सिमटता जा रहा है। बसों में खचाखच भीड़, विधि-व्यवस्था की बिगड़ी स्थिति, पानी से लेकर तेल तक और गेहूँ-चीनी से लेकर गैस-पेट्रोल तक के लिए लंबी कतारें, कूड़े की ढेर और बदबू में सांस लेने की मजबूरी शहर की वास्तविकता बनती जा रही है।

मामूली-सी बात को लेकर हड़ताल, जुलूस, बंद या बहिष्कार का नज़ारा शहरों में मिलता ही है, भिखारियों, व्यवसायियों और करतब दिखाने वालों के निज नए शगूफों का प्रदर्शन स्थल भी शहर ही होता है। रोजगार की तलाश हो तो शहर, बेरोजगारों का हुजूम हो तो शहर। भिखारियों की भीड़ हो या अपराधियों द्वारा अपनाए गए अपराध के नए-नए ढंगों की कार्य-स्थली भी शहर ही होता है।

शहरों में यह पता नहीं चल पाता है कि झुग्गी-झोपड़ियों के आगे अपनी भव्यता दिखाने के लिए ऊँची-ऊँची इमारतें बनी हुई हैं या इमारतों को ऊँचा दिखाने के लिए उसके आसपास झुग्गी-झोपड़ियाँ अपना अस्तित्व बनाई हुई हैं। हर शहर का झुग्गी-झोपड़ियों से बहुत गहरा संबंध है। ईंट-मिट्टी से उठाई गई बेतरतीब दीवारों के ऊपर फटे बोरे, पुराने टीनों, कोलतार के खाली डब्बों, पुआल, एस्बेस्टस, तिरपाल, थर्मो कोल, लकड़ी के बक्सों और प्लास्टिक के टुकड़ों आदि से घर बना लिए जाते हैं। और जमीन ? वही तो है सारी खुराफात की जड़। जब जमीन ही अपनी होती तो झुग्गी-झोपड़ियों को किसी भी क्षण उजड़ जाने का भय क्यों होता ? और तो और, हमारे महानगरों की करीब चैथाई आबादी इन्हीं झुग्गी-झोपड़ियों में गुजर-बसर करती है।

झुग्गी-झोपड़ियों में बसने वाले लोग प्रशासन को बिना कोई कर दिए बिजली, पानी, सड़क आदि का भरपूर उपयोग



करते हैं और उनकी कारगुजारियों से पूरा शहर गुंजायमान रहता है। ऐसे लोगों में से कोई ठेला लगाता है तो कोई मेला, कोई फुटपाथ पर दुकान छाने हुए है तो कोई रेलवे प्लेटफार्म पर। कुछ लोग दिन भर सड़कों-गलियों में घूम-घूम कर अपना धंधा करते हैं तो कुछ रात के अंधेरे में। फर्क इतना है कि कोई ईमान बेचता है तो कोई ईमान खरीदता है। कहने को सबका अपना धंधा है, न किसी का मंदा न किसी का गंदा।

आबादी की शहर की ओर दौड़ का परिणाम यह हुआ है कि लोगों को रहने के लिए आवास नहीं मिल पा रहा है, जिससे आवासों का भाव बढ़ जाना स्वाभाविक है। मकान, दुकान, गोदाम, गैरेज आदि की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं। शहर में जिसे एक कमरे का भी आवास मुअस्सर हो जाता है, वह अपने को भाग्यशाली समझता है। वही एक कमरा सुबह में रशोई घर और पूजा घर, दिन भर ड्राईग्रूम और रात होने पर बेडरूम बन जाता है। एक कमरा में रहने वाले परिवारों की संख्या लाखों में है।

बढ़ी हुई शहरी आबादी का सबसे अधिक कुप्रभाव यातायात-व्यवस्था पर पड़ा है। सात-आठ घंटे की ड्यूटी के लिए शहर में रहने वालों को अपने आवास से कार्य-स्थल तक जाने-आने में ही चार-छह घंटे गुजार देने पड़ते हैं। गाड़ियों और बसों की लंबी प्रतीक्षा और उसके बाद यात्रा का बोझिल सफर, आधी जिंदगी इसी में खप जाती है।

शहर में रिकशा, साइकिल, ठेला जैसे मानवचालित वाहनों की संख्या में उतनी बढ़ोतरी नहीं हुई है, जितनी बाईक, कार और अन्य चारपहिए वाहनों की। चौड़ी सड़कें अतिक्रमण से सिमट कर पतली हो गई हैं। अतिक्रमण का प्रभाव चौड़ी-चौड़ी सड़कों पर पड़ा ही है, गलियाँ भी सिकुड़ गई हैं। संकरी गलियों में घर की सीढ़ियाँ और नालियाँ बना-बना कर लोगों ने उन्हें और संकीर्ण बना दिया है। कई लोगों ने अपने मकान बढ़ा कर बना लिए हैं तो कई लोगों ने छज्जे बाहर निकाल लिए हैं। शहर से गुजरने वाली अधिकतर नदियों का स्वरूप नालों जैसा हो गया है।

ऐसा नहीं है कि अतिक्रमण का कार्य रातों-रात हो जाता है। यह काम धीरे-धीरे और इत्मीनान से होता है। लेकिन इस दौरान संबंधित विभाग वाले ऐसे कामों पर कोई आपत्ति

नहीं करते हैं। मुहल्ले वाले भी अतिक्रमणकर्ता से तभी टकराते हैं, जब उनकी निजी जमीन का अतिक्रमण होता है। शहर के कुछ अतिक्रमण तो अस्थाई हैं, मगर अधिकतर स्थाई। सड़कों पर दुकान सजाना, अपनी दुकान के सामानों को सड़कों पर फैला कर प्रदर्शित करना, गलियों में खाट, कुर्सी या मचिया बिछा कर बैठे-सोए रहना, गलियों-सड़कों पर पशु बांध कर रखना, अपने घरेलू सामानों को सड़कों, गलियों में फैलाए रखना और गृह-निर्माण की सामग्री मार्ग पर महीनों तक गिराए रखना शहरों के लिए आम बात है। झुग्गी-झोपड़ियों से त्रस्त नगरों और महानगरों में आए दिन झुग्गी-झोपड़ियाँ हटाई जाती हैं। लेकिन कुछ दिनों के बाद वहाँ फिर से नई-नई झुग्गी-झोपड़ियाँ बना ली जाती हैं। चाहे जिस तरह के प्रयोग किए जाएँ, शहरों में झुग्गी-झोपड़ियों से त्राण नहीं पाया जा सका है। इसका मूल कारण है - अतिक्रमण होते समय स्थानीय प्रशासन द्वारा ढील दिया जाना और एक बार में पूर्ण कार्रवाई नहीं करना। झोपड़ियों को तोड़ने के बाद खाली हुई जगह की घेराबंदी अथवा सड़क का चौड़ीकरण कर दिए जाने से दुबारे वहाँ झोपड़ी-निर्माण के लिए जगह नहीं मिल पाएगी। अतिक्रमित भूमि के अतिक्रमणमुक्त होने के बाद थोड़ी चैकसी बरतनी होगी। नगर निगमों और नगरपालिकाओं में सफाई-कर्मचारी नियुक्त हैं और उनके ऊपर क्षेत्रवार मेठ और मुंशी की नियुक्ति की गई है। ऐसे मेठ या मुंशियों को अतिक्रमण से मुक्त हुए क्षेत्रों अथवा नए क्षेत्रों में हो रहे अतिक्रमण की सूचना तुरंत अपने नियंत्रण पदाधिकारी को देने का भार देकर अतिक्रमण से मुक्ति पाने में सहयोग लिया जा सकता है। पुलिस का भी इस कार्य में सहयोग लिया जा सकता है। लेकिन सबसे पहले सरकारी जमीन की पहचान और उसकी घेराबंदी आवश्यक है।

झोपड़ियों में रहने वाले अपराधियों से मिलने वाली नाजायज राशि के कारण उस क्षेत्र की पुलिस उन्हें उजाड़ना नहीं चाहती। घर-घर में दाई का काम करने वाली अधिकतर महिलाओं का घर झुग्गी-झोपड़ियाँ ही होता है। इसलिए मुहल्ले वालों को झुग्गी-झोपड़ियों के बसने से कोई एतराज नहीं होता। फलतः झुग्गी-झोपड़ियों की संख्या रोज बढ़ती जाती है।

अतिक्रमण का सीधा प्रभाव सुरक्षा और यातायात पर

पड़ता है। बाधित यातायात व्यवस्था से विद्यालय जाने वाले बच्चों को देर तक जाम का सामना करना पड़ता है और उस दौरान वे भूख-प्यास से तनावग्रस्त हो जाते हैं, जो उनकी जीवन-शैली के लिए घातक है। यातायात जाम रहने से कार्यालय-कार्य बाधित होता ही है, व्यवसायियों और आम जनों को भी काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। रोगियों और परीक्षार्थियों को भी कभी-कभी भारी नुकसान सहना पड़ता है। जाम में फंस जाने से कई लोगों की ट्रेनें छूट जाती हैं और उनका सारा समय-क्रम बिगड़ जाता है। बाहरी काम का नुकसान होने से अधिक खतरा उसके कारण उत्पन्न आंतरिक तनाव से है। शहरी आबादी का अधिक प्रतिशत तनावग्रस्त होकर मधुमेह, रक्तचाप और हृदय रोगों की चपेट में है, मगर उसे रोगग्रस्त होने का कारण पता नहीं होता।

आबादी के साथ गंदगी का सीधा संबंध है। अधिकतर शहरों में लोग अपने घरों के आसपास कूड़ा फेंक देते हैं। आम तौर पर कूड़ेदानों की व्यवस्था नहीं होने या उसकी संख्या कम होने से मुहल्लों में गंदगी का साम्राज्य रहता है। शहरों की नालियाँ जाम रहती हैं और उनमें गंदगी बजबजाती रहती है। गंदगी कमोबेश शहर की घनी आबादी वाले हर मुहल्ला में पाई जाती है। ऐसा नहीं है कि शहर का हर मुहल्ला या कालोनी गंदगी झेल रहा है। कुछ इलाके साफ-सुथरे भी हैं। उसी तरह गंदगी से भरे मुहल्ले अथवा कालोनी में भी कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो विशेष ध्यान देकर अपने घर और उसके आसपास साफ-सफाई करते-कराते हैं। लेकिन इसे अपवाद कहा जा सकता है।

वाहनों के कारण शहरों में फैल रहे प्रदूषण से निजात पाने का एक बहुत बड़ा उपाय है छोटे वाहनों की जगह बड़े वाहनों का अधिकाधिक परिचालन। इससे प्रदूषण कम होने के साथ ही यातायात की समस्या भी कम हो जाएगी, जो घनीभूत होते शहरों के पर्यावरण के लिए बहुत आवश्यक है।

**अंकुश्री**  
हिन्दी लेखक  
रांची, झारखंड



## हमारा पर्यावरण, हमारा भविष्य

पर्यावरण है तो जान है, पहचान है,  
पर्यावरण है तो शान है, मुस्कान है,  
इसके बिना अधूरा ये संसार है,  
इसलिए करो इसका सम्मान,  
आओ मिलकर रखें इसका मान।

पर्यावरण है तो स्वस्थ जीवन,  
पर्यावरण है तो वायु, पानी, आश्रय, भोजन,  
पेड़ पौधे हैं मानव के लिए वरदान,  
आओ मिलकर रखें इसका मान।

बादलों में धुओं का बसेरा, नदियों में जल हुआ मलिन,  
कट रहे घने जंगल, बिगड़ रहा प्रकृति का संतुलन  
मुश्किलों में है अनमोल रत्न, धरती की बस यही पुकार,  
धुआँ हटाओ, जल बचाओ, पेड़ लगाकर करो श्रृंगार,

चलो संकल्प उठाएँ, पर्यावरण को बचाएं,  
सूखती नदियाँ, सिमटते पर्वत, जलते वन,  
सहेज कर इन्हें रखने से भविष्य होगा उज्ज्वल,  
वृक्ष हैं पर्यावरण के आभूषण, इनसे दूर होता प्रदूषण,  
पर्यावरण है सबकी जान, वृक्ष लगाकर करो सम्मान।

**संतोष कुमार**  
खुदरा व्यापार केंद्र  
आंचलिक कार्यालय, गया



# Unforgettable Memory at 3,636 Meters Above Sea Level (Sandakphu)



Nestled in the heart of the Eastern Himalayas, Sandakphu is a haven for trekkers and nature enthusiasts. Often referred to as the highest peak in West Bengal, India, at an elevation of 3,636 meters (11,930 feet), Sandakphu offers unparalleled panoramic views of the world's highest peaks, including Everest, Kanchenjunga, Lhotse, and Makalu. A trip to Sandakphu gives you mental peace and happiness.

## My Journey Begins:

The adventure to Sandakphu typically starts from Manebhanjan, a quaint town that serves as the gateway to the trek. The iconic Land Rovers, mostly vintage models from the 1950s and '60s, are the preferred mode of transport here. The route is a blend of rugged terrain, dense forests and serene villages. As you ascend, the air gets crisper and the landscapes become more breathtaking. I chose to travel in a Land Rover to enjoy the stunning views and the thrill of the four-wheel drive, giving me a chance to reflect on the adventure.

## Tumling:

The first leg of the journey takes me from Manebhanjan to Tumling. The drive, although bumpy, offers breathtaking views of lush green forests and distant snow-capped peaks. As I ascend, the air gets cooler, and the landscapes become even more enchanting. Tumling, situated on the India-Nepal border, is a quaint village offering stunning vistas and a peaceful ambiance.

## Kalapokhri:

Continuing the journey, the Land Rover makes its way to Kalapokhri, known for its unique black pond. The drive takes us through the heart of Singalila National Park, home to rich biodiversity, including the elusive red panda. The rugged terrain and steep climbs make for an adventurous ride, but the scenery is a constant reward.

## Kalapokhri to Sandakphu:

The final stretch from Kalapokhri to Sandakphu is the most exhilarating. The road is narrow and steep, testing both the vehicle and the driver's



skills. Upon reaching Sandakphu, I was greeted with a panoramic view of the Himalayan range. On a clear day, you can see four of the five highest peaks in the world, including Everest, Kanchenjunga, Lhotse, and Makalu.

### At the Summit:

Spending time at Sandakphu is nothing short of magical. The sunrise and sunset here are spectacular, casting a golden glow on the peaks. The sight of the "Sleeping Buddha" formation, with Kanchenjunga at its core, is truly awe-inspiring.

Traveling to Sandakphu in a Land Rover is an adventure that combines the thrill of off-roading with the serene beauty of the Himalayas. It's a journey that offers not only breathtaking views but also a sense of accomplishment and a deeper connection with nature. Whether you're an adventure enthusiast or a nature lover, a Land Rover expedition to Sandakphu is an unforgettable experience.

### Precautions for Safety and Travel:

When traveling to Sandakphu, it's crucial to acclimatize properly to avoid altitude sickness, especially since the region is at high altitudes. Pack warm clothing as temperatures can drop unexpectedly, and make sure you're physically fit for the journey, as the terrain can be challenging. Always travel with a guide who is familiar with the area for added safety and insights. If you're riding in a Land Rover, ensure that you wear your seatbelt and the vehicle is in good condition, as the roads can be steep and bumpy. Stay hydrated, carry snacks, and be mindful of altitude sickness symptoms, such as headaches or dizziness; if you feel unwell, descend immediately. Keep emergency contact information and the details of local services on hand.

**Tanmay Das**  
Manager  
Barasat ZCOD  
Barasat Zone



## चाहतों से भरा जीवन

सुकून की तालाश में, तू फिरा इधर-उधर,  
मगर था जहां सुकून, गयी नहीं वहाँ नज़र,  
तू छोड़ आया एक शहर, तू छोड़ आया एक गली,  
जिंदगी के संग चला, ये जहां-जहां चली,  
इस उड़ान ने तुझे था यहाँ बहुत दिया,  
चाहतों को पर तेरा नया मुकाम दिख गया।

तू फिर उड़ा ये सोचकर कि,  
जो तलब थी अब तलक,  
पूरी होगी ये वहाँ जहां दिखी है एक झलक,  
लंबा ये सफर रहा, हौसला मगर रहा,  
जो चाहा तूने पा लिया जो दूर से था दिख रहा।

था वहाँ अंधेरा बहुत, तू भी घबरा रहा,  
पाने को सुकून, तू भी विचलित हो रहा,  
फिर हुई जो रोशनी, था नहीं वहाँ कोई,  
हाँ मगर था आइना, आईने में अक्स भी।

वो अक्स था तेरा वहाँ,  
कहने तुझसे लगा,  
मैं तुझमे ही सदा रहा,  
जिंदगी जो थी तेरी, चाहतों में थी घिरी,  
चाहतों में तू रहा तो, मैं तुम्हें दिखा नहीं।

मैं दौड़ में आराम हूँ, मैं खास नहीं आम हूँ,  
मैं सबमे हूँ बसा फिर भी सबका मैं ख्वाब हूँ,  
तू तम को त्याग दे, तू रोशनी का साथ ले,  
अब सुकून को तलाश मत,  
क्या है सुकून ये जान लें।

**अनु कुमारी**  
मानव संसाधन विभाग  
धनबाद आंचलिक कार्यालय



## उदार उसकी छाया

सिंदेवाही से चंद्रपुर की तरफ प्रस्थान करते हुये राजोली गाँव से सटी हुयी अंदाजन दो किलोमीटर की सड़क मुझे बेहद पसंद है। उस सड़क के दोनों तरफ नीम के सैकड़ों पेड़ अविचल खड़े हैं। ग्रीष्म में जब सूर्य ऊपर जल रहा होता है, तब स्वयं सूर्यदेव को भी उस सड़क तक पहुँचने के लिए पसीना बहाना पड़े इतनी घनी झाड़ियाँ हैं। बरसात के मौसम में तो वो हरे भरे पेड़ मन मोह लेते हैं। दो-चार दिन पहले उसी सड़क से जाना हुआ। सुबह का सुहाना समय था। सूरज और बादलों के बीच लुकाछिपी का खेल चल रहा था। खूबसूरत नजारे, चारों तरफ धान के हरे भरे खेत, नदी का शांत प्रवाहित पानी, तरह-तरह के छोटे-बड़े पेड़, तरह-तरह के पक्षी विहार कर रहे थे। प्रकृति का सामर्थ्य असीम है। हरियाली भरे शांत वातावरण में हृदय की धड़कने लयबद्ध हो जाती हैं, मन और आत्मा को ध्यान एवं समाधि में खो जाने जैसा सूकून मिलता है। ऐसा लगता है कि पेड़ के पत्तों की सरसराहट मानो हमें कोई रहस्य बता रही हो, बहती हुई नदी की जल धारा हमारी चिंताओं को बहा ले जा रही हो, सूर्योदय और सूर्यास्त की लालिमा हमारे मन के घावों को भर रही हो।

यह सोचते-सोचते मेरा ध्यान अचानक एक पेड़ की तरफ गया। ऐसा क्या था उस पेड़ में? कुछ भी तो नहीं। सुगंधित फूल नहीं। रसदार फल नहीं। वो सब छोड़िए, लेकिन एक पत्ता भी नहीं था। एक बेजान, उजड़ा, सूखा, एकाकी पेड़। बावजूद इसके, यह पेड़ कितना सुंदर दिखता था। ऊपर वर्णित सड़क से लगभग तीस मीटर दूर एक खेत में यह पेड़ था। एक निष्पर्ण पेड़। उन हरी-भरी झाड़ियों के नजदीक यह पेड़ ऐसा लग रहा था मानो पंख फैलाते मोर के पास एक मृतप्राय कौवा। दूर से देखकर लगा कि यह कोई आम का पेड़ होगा। वर्तमान में भले यह पेड़ सूखा, उजाड़, निष्पर्ण और एकाकी दिखता हो, फिर भी इस पेड़ के तने की लंबाई

व चौड़ाई और शाखाओं के फैलाव को देखकर कल्पना की जा सकती है कि उस वृक्ष का इतिहास समृद्धि और उन्नति भरपूर रहा होगा। लेकिन .... किसी जमाने के इस समृद्ध पेड़ के नीचे, अब कोई पथिक छाया की तलाश में नहीं आता। यह देखकर इस शुष्क पेड़ को भीतर ही भीतर ग्लानि महसूस होती होगी। सभी पुरानी प्रिय-अप्रिय घटनाएँ उसकी आंखों के सामने तैरती होंगी। कभी एक पौधे से विशाल छायादार वृक्ष बनना और फिर निर्जीव और शुष्क वृक्ष में ढलना ... ये सफर उसे याद आता होगा।

“अकेलेपन का अर्थ केवल लोगों की अनुपस्थिति नहीं है-यह उन वार्तालापों की खामोशी भी है जो कभी जीवन को परिभाषित करते थे, और उन यादों की गूँज है जिन्हें अब भुला दिया गया है, जैसे-जैसे सालों की संख्या बढ़ती जाती है, अकेलापन एक मौन साथी बन जाता है, जो हमें यह नहीं याद दिलाता कि हमने क्या खोया, बल्कि यह कि क्या हम जो चाहते थे, वह कभी मिला। उम्र के साथ अनुभव का ज्ञान बढ़ता है, लेकिन यह अकेलेपन का भारी बोझ भी लाती है। दुनिया जहां आगे बढ़ जाती है, वही आप स्थिर रहते हैं, न देखे जाते हैं और न सुने।”

अब इस अकेले खड़े पेड़ के मन में क्या चल रहा होगा, ऐसा एक प्रश्न मेरे मन में उठा। मैं रुका और उस पेड़ से पूछा - तुम यहाँ ऐसे अकेले अविचल खड़े हो, कोई तुम्हें पूछने वाला नहीं है। जीवन के इस पड़ाव पर आकर तुम्हें कैसा लग रहा है? पुरानी सुनहरी यादें तुम्हारे भावविभोर मन को कुरेदती हैं या नहीं? वो बोला.....

मुझे याद है आज भी वो हर बात, वो सारे दिन और रात।

मुझे याद है आज भी मुझे लगाने वाले वो दो हाथ, बड़ा

होने में उनका दिया हुआ साथ।

मुझे याद है आज भी कुदरत का वो अनोखा रूप, वो सर्दी की सुनहरी धूप।

मुझे याद है आज भी घने पत्तों का खिलना, शाखाओं पे बच्चों का झूलना,

वो हँसते खिलखिलाते बच्चे, उनके खाये हुये वो आम कच्चे-कच्चे।

मुझे याद है आज भी छाया तले बैठा मानुष और निहार कर देखा इंद्रधनुष।

मुझे याद है आज भी वो गरजते बादलों का शोर, उस शोर में नाच दिखाते मोर।

मुझे याद है आज भी वो चाँद...जैसे आकाश में हो कोई मोती, दूर मंदिर में जलते दीपक की ज्योति।

मुझे याद है आज भी उस राहगीर को मिली थी शीतल छाया, उस छाया में उसने मधुर गीत था गाया।

मुझे याद है आज भी वो पहली बारिश के बाद मिट्टी की महक, शाखाओं पे बैठी चिड़ियों की चहक।

मुझे याद है आज भी वो खिलखिलाती तितलियाँ और पंछी रंगबिरंगे, वो लहराती कटी हुयी पतंगे।

मुझे याद है आज भी बरसात का वो बादल काला मतवाला, मधुर गीत गाती कोकिला,

पहिली किरण से हुआ उजियाला, पक्षियों से बनी विशाल माला, ग्रीष्म की तपती अग्निज्वाला,

बच्चों ने बांधा हुआ झूला, वानरसेना की मर्कटलीला, गाँव की नयी गौशाला, रखवाली करता ग्वाला,

क्षितिज पे वो सूरज चमकीला।

ये सब आज भी मैं भूला नहीं हूँ। क्योंकि ये सब मैंने अपनी गहरी जड़ों में संग्रहीत किया है। अच्छी यादों की जीवंतता बढ़ती उम्र की नीरसता के विपरीत होती है, जिससे समय का बीतना और अधिक भारी एवं अपरिवर्तनीय महसूस होता है। यह सब सुनने के बाद किसी को भी उस पेड़ पर तरस

आयेगा। देखिये ना, इस हरी भरी सृष्टि में यह पेड़ अकेला खड़ा है। ऐसा लगता है, जैसे उसने अपनी सारी सांसारिक जिम्मेदारियों को त्याग दिया हो। धरातल पर यह एक ध्यानी योगी की तरह अधिष्ठित है। फिर भी यह पेड़ आज अविचल खड़ा है। फिर से फलने- फूलने की आस लेकर। उसे आज भी आशा है पुनरुत्थान की। इसकी छाया पहले जैसी नहीं है, थोड़ी ही सही लेकिन शीतलता देने में सक्षम है। महाराष्ट्र के महान संत ज्ञानेश्वर कहते ही थे,

**जो खांडावया घावो घाली,**

**का लावणी जयाने केली,**

**दोघा एकची सावली,**

**वृक्ष दे जैसा।**

इसका अर्थ है की पेड़ लगाने वाले को जैसी शीतल छाया देता है वैसी ही काटने वाले को भी देता है, और भेद न करते हुये उदारता से जीवन व्यतीत करता है। वृद्धावस्था आत्मचिंतन का एक ऐसा कालखंड होता है, जहां समय चेहरे पर कहानियां लिख देता है और धुंधले होते पलों की जगह यादें भर जाती हैं। कहीं कुछ खोने का दर्द होता है, तो कहीं जीवन के अनुभव का ज्ञान। फिर भी उस शांत एकांत में, उम्मीद धीरे से फुसफुसाती है, यह याद दिलाने के लिए कि हर अंत एक नई शुरुआत को जन्म देता है। जीवन धीमा हो सकता है, लेकिन इसकी सुंदरता बनी रहती है, हर सुबह के सूरज में, हर मुस्कान की गर्मजोशी में, और नए तरीके से उद्देश्य पाने की संभावना में। वृद्धावस्था अंत नहीं है-यह एक नए अध्याय तक पहुंचने का पुल है, जो लिखे जाने की प्रतीक्षा कर रहा है। इस वृक्ष के बारे में यह कहना उचित होगा कि, 'उदार उसकी छाया'।

**स्वप्निल कुथे**

शाखा प्रबन्धक -चिकनी शाखा

विदर्भ अंचल





## ‘बदलाव की लत’, सही या गलत?

बदलते समय के साथ समाज की सोच, उसकी चाल-ढाल में भी बड़ा बदलाव आया है। जिसे नई पीढ़ी “उन्नति” तो पिछली पीढ़ी “अवनति” कहती है। पीढ़ियों के मध्य विचारों के इस टकराव का कारण है कि पुरानी पीढ़ी स्थिरता पाना चाहती है, जबकि नई पीढ़ी बदलाव की भूखी होती है और दोनों एक-दूसरे की आवश्यकता को देखने में असमर्थ होते हैं। आजकल नई पीढ़ी में इसी बदलाव की पहचान है – “कृतिम बुद्धिमत्ता” अर्थात् अंग्रेजी में कहें तो “आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस” जिसे पुरानी प्रथाओं एवं रीति रिवाजों को नकारने वाली युवा पीढ़ी शोर्ट फॉर्म में "AI" कहती है। "AI" को परिभाषित करना मानो – जैसा नाम, वैसा काम। यह हर कार्य को कम मेहनत के साथ आसानी से करने की नई तकनीक है, जिसकी ‘लत’ नई पीढ़ी को लग चुकी है। इस बात से कई पाठक शायद असहमत हों पर देखा जाए तो यही आम धारणा है। प्रत्येक कसौटी को कम करना ही इसका काम है – अब चाहे वो वेतन हो, समय हो, मेहनत हो या अन्य कुछ। सिर्फ जिस कसौटी में बरकत हो रही है वो है वैश्विक धरातल पर विकास, लेकिन प्रश्न ये है कि “किस बलिदान या किसके बलिदान पर?” चलिए इसका उत्तर पाने के लिए एक कहानी पढ़ते हैं:

कहानी की शुरुआत कोलकाता शहर के नजदीक एक छोटे से गांव बदिनिपुर में एक मंजिले मकान में रहने वाले सुकुमार घोष से होती है, हर युवा की तरह अपनी किस्मत को बदलकर एक बेहतर ज़िंदगी की चाह में आगे बढ़ने वाले सुकुमार की किशोरावस्था से ख्वाहिश थी कि उसे एक आलीशान लाइफस्टाइल जीने के लिए एक विख्यात कॉलेज से इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल करनी है, फिर कल्पित स्वप्न सुंदरी एवं उसकी प्रेमिका से विवाह करके उसके साथ या अपने अमीर दोस्तों के साथ घूमने रमणीय स्थलों पर जाना है। यह सब वह बहुत कम मेहनत से और बहुत जल्दी पा लेने की कामना करता है। लेकिन उसकी यह अमीर बनने की ‘लत’ माफ़ कीजिए ख्वाइश के पूरा होने की संभावना को समझने के लिए ज़रा उसकी वास्तविक दुनिया में झाँकते हैं जिसकी

शुरुवात उसकी पारिवारिक स्थिति से होती है। सुकुमार की मां शोभा चैटर्जी एक घरेलु महिला हैं, मन में हमेशा अपने परिवार के उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की प्रार्थना लिए शोभा जी दिन भर अपने घर तथा अपनों को सवारने में उलझी रहती थी। सुकुमार के पिता शांतनु घोष सरकारी स्कूल में विज्ञान के अध्यापक हैं, अपने पुत्र के विपरीत अधिक धन को लोगों के पतन का कारण मानने वाले विद्वान, जिन्होंने ज़्यादा पैसा तो कभी कमाया नहीं, पर खूब सारी इज्जत ज़रूर कमाई है। कई बार निजी विद्यालयों से बुलावा आने पर भी हँसते-हँसते बस इसलिए प्रस्ताव ठुकरा दिया क्योंकि उनका मानना था कि अमीरों के बच्चों के पास उनके सपनों को पूरा करने के लिए संसाधन होते हैं – चाहे उनके पास प्रतिभा हो या ना हो। लेकिन गरीबों के बच्चों के पास वो सुविधा कहाँ? इसी सोच के कारण उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी अल्प वेतन में बिता दी।

पिता विज्ञान के अध्यापक होने के कारण, सुकुमार को बचपन से ही इस विषय में रुची रही। रुची क्या जनाब उसे विज्ञान को समझने की ‘लत’ इतनी थी कि उसने अपने घर का कोई भी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण परीक्षण किए बिना नहीं छोड़ा। विज्ञान में रुचि के चलते उसका दाखिला विख्यात इंजीनियरिंग कॉलेज में हो गया और वहाँ उसे विद्वान दोस्तों का साथ भी मिला लेकिन वो सब उसकी तरह मध्यमवर्गीय परिवारों से ही थे और उनकी ख्वाहिश भी सुकुमार जैसी ही थी। उन्होंने अपने सपनों को पूरा करने के लिए इंजीनियरिंग में कोई नई पहल ईज़ाद करने का रास्ता चुना। सुकुमार ने ‘AI’ के क्षेत्र में प्रयोग करने शुरू किए और उसने ऐसे ईयरबड्स बनाए, जिससे वो दूसरों के मन की बात जान सकता था। कहते हैं कि आविष्कार तब जन्म लेता है जब बैचन मन कल्पना को वास्तविकता में बदलने का प्रयास करता है।

सुकुमार के लिए कॉलेज में जाने के दो ही कारण थे पहला दोस्तों के साथ गप्प-शप्प करना और दूसरा विज्ञान लैब में अपने प्रयोगों को सफल करने का प्रयत्न। सुकुमार जितना काम में सुस्त था उतना दिमाग से तेज़, मशीनों या ये कहें कि विज्ञान को जानने की लत तो उसमें बचपन से थी।

जब उसका परिचय “एआई” से हुआ तो उसने हर रोज़ कई घंटे इसे समझने में लगाए और उसके ज़रिए अपनी किस्मत की चाबी बनाने में दिन - रात एक कर दिया। इसी प्रक्रिया के दौरान उसे एक ख्याल आया कि क्यों ना वो कोई ऐसा यंत्र बनाए जिससे वह दूसरों के मन की बात जान सके और अगर ऐसा यंत्र बन गया तो वह रातों-रात सिर्फ अमीर ही नहीं बल्कि मशहूर भी हो जाएगा।

इसी संकल्प के साथ उसने एक कर्णध्वनि यंत्र, आसान शब्दों में “ईयरबड्स” बनाए। जिसका सीधा कनेक्शन उसके लैपटॉप में बनाए एआई सॉफ्टवेर से था, जो सामनेवाले की बातों को उसकी ध्वनि एवं अन्य विविध क्रियाओं का आकलन करके हकीकत में वो इंसान क्या कहना चाहता है वह विकोडन (डीक्रिप्शन) करके बता सकता था। सुकुमार के मन में विचार आया कि इस उपकरण की उपयोगिता की जांच अपने परिवार और दोस्तों से ही क्यों न की जाए। तो अपने सॉफ्टवेर को मोबाइल में अपलोड करके जनाब चले अपने माता-पिता पर परीक्षण करने -

सुकुमार - “मां ! एक बात पूछूँ? पर सच बोलना ?”

मां - “बोल बाबू” (बोलो बेटा प्रेम भाव से)

सुकुमार - “क्या तुम्हें कभी लगा कि मेरे बस ख्वाब बड़े -बड़े है पर उसके लिए मेरी प्रतिभा बहुत ही न्यूनतम है?”

मां (कह रही है) - “नहीं, ऐसा क्यों? तेरा दिमाग तो सच में बहुत तेज़ है मुझे पूरा भरोसा है कि तू ज़रूर अपना सपना पूरा करेगा।”

एआई (विकोडन करके) - “पता नहीं तेरा दिमाग तो तेज़ है पर तू अपना सपना पूरा कर पाएगा की नहीं पता नहीं।”

सुकुमार - “मां, क्या तुम मुझे प्यार करती हो?”

मां (कह रही है) - “यह कोई पूछने की बात है? क्या हो गया है तुझे? बाबू बहुत प्यार करती हूँ।”

एआई (विकोडन करके) - “नालायक, बहुत प्यार करती हूँ तुझे।”

मां पर परीक्षण के बाद उसने अगला लक्ष्य अपने पिताजी को बनाया जो दिन-रात उसे स्वप्न उड़ान छोड़कर ज़मीनी हकीकत से जुड़ने को कहते थे -

सुकुमार - “बापी ! (बाबा) एक बात पूछूँ?”

पिता (कह रहे है) - “बोल (बोलो) तातारी (जल्दी)!”

एआई (विकोडन करके) - “बोल (बोलो), फिर से कोई बेकार की बात ही कहेगा।”

सुकुमार - “क्या आपको मुझ पर भरोसा है?”

पिता (कह रहे है) - “किस बात पर?”

एआई (विकोडन करके) - “एकदम नहीं, पर किस विषय में? यह तो जान लूँ”

सुकुमार - “यहीं कि मैं अपने अरमानो को कभी पूरा कर पाऊंगा या नहीं?”

पिता (कह रहे है) - “हम्म”

एआई (विकोडन करके) - “नहीं कर पाएगा, मुझे पता है जिस तरह का निट्टल्ला लाल है तू। वापस मेरे पास आकर रोएगा और मुझे ही किसी स्कूल में तेरी नौकरी के लिए बात करनी पड़ेगी।”

सुकुमार यह सुनकर ज़रा मौन रहा अपितु उसे यह तो पता था कि उसके बाबा उससे नाखुश ही रहते थे पर उनकी नाउम्मीदी ने उसे ठेस पहुँचाई थी। कुछ और न कहकर वह वहां से चला गया। उस दिन कॉलेज पहुंचकर उसने कुछ दोस्तों पर भी इसका प्रयोग किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि जिन दोस्तों को वह अपना सबसे प्रिय मानता था और उनसे यह भरोसा रखता था कि वे भी उसे उतना ही चाहते हैं और भरोसा करते हैं, वह एक झटके में टूट गया। सुनने को तो लगभग सबके मुंह से उसने अच्छी बातें ही सुनी, लेकिन असल में उनमें सिर्फ उसके प्रति ईर्ष्या और नफरत ही पाई। मौका मिलने पर उसका फायदा उठाने वाली बातें जानकर, उसे एक बार लगा कि शायद एआई के प्रोग्रामिंग में ही कोई गड़बड़ तो नहीं हुई, परंतु नहीं, ऐसा कुछ नहीं था, कोई गड़बड़ नहीं थी। सारी गड़बड़ उसकी समझ में थी। मानवीय दुष्कृतियों की जड़ें भय की मिट्टी में गहराई तक दबी होती हैं

और दूसरों पर नियंत्रण की प्यास इन्हें पोषित करती है।

उस दिन उसने कोई क्लास अटेंड नहीं की, ना वो घर गया। आधे मन से वो किसी स्टॉल में जा बैठा, आज की सारी घटनाओं ने उसके मन पर एक गहरी छाप छोड़ दी थी। उसका विश्लेषण करते हुए, अचानक उसके कान पर अखबार बेचने वाले की आवाज़ गई – “आज की ताज़ा खबर ! आज की ताज़ा खबर ! एआई ने छिनी 20000 लोगों की नौकरी। विदेशी देश में एआई के कारण हुआ बड़ा नुकसान। आज की ताज़ा खबर ! आज की ताज़ा खबर !” यह सुनकर उसने एक अखबार खरीदा और आखरी पृष्ठ तक पहुंचते-पहुंचते उसने ‘एआई’ से संबंधित कई नकारात्मक और सकारात्मक खबरें पढ़ी। साथ में सरकार का स्लोगन ‘एआई है जिम्मेदारी’ जैसे खबरों को पढ़कर उसने सोचा कि शायद ज़रूरी नहीं कि हमेशा कोई नई चीज़ विकास या पतन का ही कारण हो, उसके इस्तेमाल पर ही शायद उसका परिणाम निर्भर करता है। बन्दूक लोगों की रक्षा भी करती है और विनाश भी, यह शायद इस पर निर्भर है कि वो किन हाथों में है। ठीक यही कुछ “कृतिम बुद्धिमत्ता” के साथ भी है जिसका उपयोग या दुरुपयोग उसे इस्तेमाल करने वाले के हाथों पर निर्भर है।

साथ ही उसने यह भी अनुभव किया कि शायद जिस शक्ति ने इंसान को बनाया है, उसकी विज्ञान की समझ हम सबसे बेहतर है, जब उसने किसी के मन की बात जानने से हमें अंजान रखा है तो शायद इसकी कोई ठोस वजह रही होगी, आज कुछ लोगों के दिल की बात जानकर यदि मुझे अब तक अपना सम्पूर्ण जीवन मिथ्या लग रहा है तो फिर यदि मैं सम्पूर्ण संसार के मन की बात जान जाऊंगा, तब शायद जीने की चाह ही खत्म हो जाएगी। बेहतर यही है कि मैं इसे तोड़ कर सब भूल जाऊँ, जो मुश्किल तो होगा पर कम से कम अपने जीने का तरीका बदल दूंगा।

यह सोचकर उसने ‘ऐप’ को डिलीट कर दिया और कई बातें अपनी मेमोरी से भी।

**सुकन्या दत्ता**  
राजभाषा अधिकारी  
नासिक अंचल



## क्या से क्या हो गए... हम

कच्चे घर, टपकती छतें,  
सोंधी मिट्टी की खुशबू,  
लालटेन की लौ में पढ़ना,  
दादा-दादी की बनावटी डांट खाना,  
आनंदभरा ये बचपन था अपना,  
पर ना जाने क्यूँ...,  
आज का बचपन नीरस-सा हो गया है?

बड़ी इमारतें, ऊंचे फ्लैट, बंद दरवाजे,  
मोबाइल में मशगूल आज के बच्चे,  
नयी किरण की आस में डूबे प्राणी,  
बच्चों की उपेक्षाओं में जी रहे बूढ़े प्राणी,  
ना जाने क्या से क्या हो गए... हम ।

कच्ची उम्र, नशे का जूनून,  
पल भर में करोड़ों कमाने के स्वप्न,  
बढ़ती नफरत में भाईचारा हो रहा दफन,  
फैशन के करीब, मेहनत से दूर,  
ना जाने क्या से क्या हो गए... हम ।

क्षणिक लगाव की आंधी में डूब,  
टुकड़े-टुकड़े हो कट रहे हम,  
रिश्ते नाते, दोस्तों से दूर,  
टी.वी, सोशल मीडिया के करीब,  
ना जाने क्या से क्या हो गए... हम ।

संस्कृति और परंपराओं से दूर,  
आभाषी दुनिया में डूब रहे हैं हम,  
ना जाने क्या से क्या हो गए ...हम।

**शिल्पी भाटिया**  
ग्राहक सेवा सहयोगी  
अस्ति वसूली शाखा  
राँची अंचल





## MD & CEO Visit / Town Hall Meetings





## Executive Directors Foreign Visits



कार्यपालक निदेशक श्री एम कार्तिकेयन ने 22.12.2024 से 29.12.2024 तक केन्या स्थित बैंक की शाखाओं एवं कार्यालयों का दौरा किया।

## Executive Directors Visits



नागपुर अंचल में कार्यपालक निदेशक श्री एम कार्तिकेयन



राजकोट अंचल में कार्यपालक निदेशक श्री सुब्रत कुमार



जोधपुर अंचल में कार्यपालक निदेशक श्री सुब्रत कुमार



तेलंगाना अंचल में कार्यपालक निदेशक श्री राजीव मिश्रा

## नटी बिनोदिनी

पश्चिम बंगाल, जिसे भारतीय संस्कृति और साहित्य का केंद्र माना जाता है, कला और प्रदर्शन के क्षेत्र में भी अग्रणी है। थिएटर और सिनेमा की बात हो तो इस क्षेत्र ने भारत को कई अद्भुत रत्न दिए हैं। उनमें से एक नाम है - नटी बिनोदिनी, जिन्हें बंगाली थिएटर की पहली महिला अदाकारा और सशक्त नारी का प्रतीक माना जाता है। साथ ही, बंगाल का फिल्म उद्योग भी भारत के सबसे पुराने और समृद्ध सिनेमा उद्योगों में से एक है। यह आलेख नटी बिनोदिनी के जीवन और बंगाल फिल्म उद्योग के विकास पर केंद्रित है।

31 दिसंबर 2024 के “दैनिक विश्वमित्र” में प्रकाशित एक ऐतिहासिक समाचार के अनुसार, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने घोषणा की है कि कोलकाता के प्रतिष्ठित स्टार थियेटर का नाम अब “नटी बिनोदिनी” के नाम पर रखा जाएगा। यह कदम बंगाली रंगमंच की इस महान अदाकारा और सांस्कृतिक धरोहर को सम्मानित करने का प्रयास है।

नटी बिनोदिनी, उन्नीसवीं सदी की बंगाल की अद्वितीय रंगमंच कलाकार, ने न केवल अपने समय में मंच कला को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया, बल्कि सामाजिक अन्याय के खिलाफ भी संघर्ष किया। 1883 में जब स्टार थियेटर की स्थापना के लिए धनराशि जुटाई जा रही थी, तो बिनोदिनी ने भी इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दुर्भाग्यवश, उस समय के समाज में महिलाओं के योगदान और अधिकारों को वह सम्मान नहीं दिया गया, जिसकी वे हकदार थीं।

इस निर्णय को बंगाल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और नारी सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में देखा जा रहा है। यह केवल एक इमारत का नाम बदलने का कार्य नहीं है, बल्कि बंगाल के रंगमंच इतिहास और उसमें महिलाओं की भूमिका को नई पहचान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।



इस पृष्ठभूमि के साथ, यह आलेख नटी बिनोदिनी के जीवन, उनके योगदान, और बंगाल के रंगमंच व फिल्म उद्योग के विकास के उस लंबे सफर को प्रस्तुत करेगा, जिसने भारतीय कला और संस्कृति को समृद्ध किया है।

### नटी बिनोदिनी: संघर्ष और सृजन की कहानी : -

नटी बिनोदिनी का जन्म 1863 में कोलकाता में एक गरीब परिवार में हुआ। उनका असली नाम “बिनोदिनी दासी” था। वह एक ऐसी समय में पैदा हुई जब थिएटर को सम्मानजनक पेशा नहीं माना जाता था और महिलाओं का इसमें भाग लेना सामाजिक रूप से निंदनीय था।

उनकी माँ ने आर्थिक संकट के कारण उन्हें थिएटर से जोड़ा। उनकी प्रतिभा को प्रसिद्ध थिएटर निदेशक और अभिनेता गिरिश चंद्र घोष ने पहचाना। गिरिश बाबू के मार्गदर्शन में बिनोदिनी ने न केवल थिएटर को अपनाया बल्कि इसे अपना जीवन समर्पित कर दिया।

### थिएटर में योगदान

नटी बिनोदिनी ने बंगाली थिएटर में महिला पात्रों को नया आयाम दिया। उनकी प्रतिभा और अभिनय कौशल ने उन्हें बेहद लोकप्रिय बना दिया। उन्होंने सीता, द्रौपदी, चैतन्य महाप्रभु और मीराबाई जैसे किरदारों को जीवंत किया।



**थिएटर में अद्वितीय प्रतिभा:** बिनोदिनी का अभिनय कौशल ऐसा था कि उन्होंने द्रौपदी, सीता, और चैतन्य महाप्रभु जैसे जटिल किरदारों को बखूबी निभाया।

**स्त्री पात्रों का पुनर्परिभाषित चित्रण:** बिनोदिनी ने अपने अभिनय से स्त्री पात्रों को नई ऊंचाइयां दीं, जिससे थिएटर समाज में अधिक स्वीकृत हुआ।

**स्टार थिएटर:** उन्होंने गिरिश चंद्र घोष के साथ स्टार थिएटर की स्थापना में योगदान दिया, जो थिएटर को पेशेवर रूप से आगे बढ़ाने में सहायक हुआ। यह थिएटर बंगाल के सांस्कृतिक जीवन का केंद्र बना।

12 वर्षों के अपने थिएटर करियर में उन्होंने लगभग 80 प्रमुख नाटक किए।

उनकी आत्मकथा, आमार कथा, बंगाली थिएटर और महिलाओं की स्थिति पर एक अमूल्य दस्तावेज़ है।

**नारीवादी भूमिका:** एक महिला होने के कारण, उन्हें समाज के कठोर नियमों और पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ा। लेकिन उन्होंने अपने संघर्ष और आत्मकथा आमार कथा के माध्यम से यह साबित किया कि थिएटर केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि महिलाओं के सशक्तिकरण का भी माध्यम है।

**संघर्ष और विरासत:** बिनोदिनी जी को अपने जीवन में कई प्रकार के संघर्षों का सामना करना पड़ा। एक ओर, उनके योगदान ने बंगाली थिएटर को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया, तो दूसरी ओर, उन्हें समाज के दकियानूसी दृष्टिकोण और व्यक्तिगत आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा।

आज, बिनोदिनी जी को एक ऐसी महिला के रूप में याद किया जाता है, जिन्होंने न केवल थिएटर को समृद्ध किया बल्कि महिलाओं के लिए इस क्षेत्र में रास्ता खोला।

**संजय कुमार सेन**  
प्रबंधक, राजभाषा,  
हावड़ा अंचल



## किसान तुम महान हो

तपती धूप में नंगे पाँव खेतों में हल चलाता है,  
बंजर जमीं को अपनी मेहनत से उर्वर बनाता है,  
सूखी पड़ी धरती पर वो नमी लौटाता है,  
तब जाकर कहीं खेतों पर किसान फसल उगाता है।

आई बारिश खिल गए मन, एक नयी उम्मीद जगी,  
किसानों के टूटे मनोबल को, अब जाकर नयी नींव मिली।  
जो पिछले मौसम में खोया था, वो इस मौसम पा जाएगा,  
नयी फ़सलों की खेती कर, वो अपना नुकसान भर पाएगा।

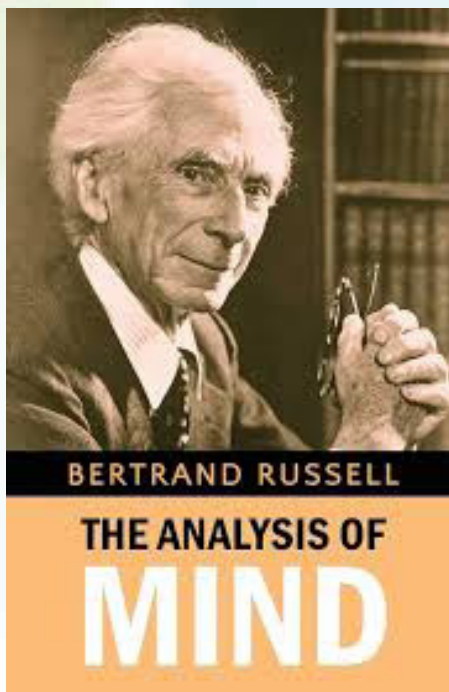
पर पता नहीं था उसको कि ये मौसम की चाल है,  
बह गई सब फसलें उसकी किसान फिर से बेहाल है।  
इंतजार किया अब उसने शरद ऋतु के आने का,  
नयी फ़सलों के साथ खड़ा है! ये किसान है, कहाँ मानेगा।

पड़ी ठंड कड़ाके की, सब फसलें अब बेजान हैं,  
ठगा-सा खड़ा हुआ वो, मेरे देश का किसान है।  
कोई न साथ खड़ा उसके, जिसने सबकी भूख मिटायी,  
सबने आँखें मूँद ली, जब बात किसानों की आयी।

कहाँ गयी वो न्यायपालिका, जो सबको न्याय देती है,  
कहाँ गया वो लोकतंत्र, जो सबकी बात सुनता है,  
कहाँ गया वो प्रशासन, जो सबकी व्यवस्था करता है,  
कोई बताए, क्यों आखिर मेरा किसान फांसी लेकर मरता है।

**श्री राममोहन**  
प्रबंधक, कृषि वित्त विभाग  
कानपुर अंचल





## Review of Bertrand Russell's Book 'The Analysis of Mind' in the Context of Vedic Philosophy

Bertrand Russell's 'The Analysis of Mind' offers a profound exploration of psychology, philosophy, and the interplay between the conscious and subconscious. By integrating behaviorism, philosophical analysis, and neuroscience, Russell challenges existing paradigms to unravel the nature and mechanisms of the mind. When juxtaposed with the ancient wisdom of India's Vedic seers, this work reveals a timeless human endeavor to decode the mysteries of the mind, articulated through the intellectual frameworks of their respective eras. Below are the key themes of Russell's work, analyzed alongside Vedic thought:

### The Mind-Body Interconnection

Russell emphasizes that the mind cannot be separated from the body. He challenges Cartesian dualism and explores how mental events are deeply rooted in physical processes. Thoughts, emotions, and consciousness result from interactions between the brain and the nervous system. Similarly, the Chandogya Upanishad and

the Brihadaranyaka Upanishad discuss the deep connections between the soul, mind, and body. The Yoga Sutras also highlight the inter-relationship between the body and mind, discussing methods to enhance both through yogic practices based on the concept of Pancha Mahabhuta (the five great elements).

### Perception beyond Objective Reality

Russell argues that what we perceive is not an exact replica of reality. Our understanding is filtered through subjective experiences, as these experiences shape personal biases influenced by sensory input and cognitive processes. Consequently, perception is not a direct representation of the external world but rather a mental construct. The Brihadaranyaka Upanishad discusses the concepts of Maya (illusion), the observer (Drashta), and the observed (Drishya), asserting that sensory knowledge is not the ultimate truth. Similarly, the Mundaka Upanishad presents the famous parable of "two birds on

the same tree," while the Mandukya Upanishad describes the four states of consciousness—Jagrat (waking), Swapna (dream), Sushupti (deep sleep), and Turiya (the transcendental state). Vedantic philosophy strongly asserts that our sensory perceptions do not reveal the ultimate reality.

#### Memory as the Architect of Consciousness

Russell's theory of the mind places memory at the center, arguing that what we consider consciousness largely depends on our ability to recall past experiences. Memory connects different moments, creating the continuity that defines our sense of self and experience. Vedic literature also acknowledges the role of memory in shaping consciousness, considering it a bridge between the self (Atman) and the absolute reality (Brahman). However, Vedanta sees consciousness as the ultimate goal, with memory as a means to that end. In contrast, Russell prioritizes memory as the primary factor shaping consciousness. This represents a fundamental philosophical divergence—whether the destination (consciousness) or the journey (memory) is more important.

#### Instincts, Emotions, and Behavior

Russell explores the connection between emotions and instinctive behavior, suggesting that emotions are responses to stimuli that have evolved for survival. Emotions influence our actions and decisions, and understanding their biological roots helps us grasp why we react in particular ways to specific situations. While modern psychology extensively studies instincts and emotions, Vedantic literature does not delve as deeply into these aspects. However, chapters 2 (Sankhya Yoga) and 3 (Karma Yoga) of the Bhagavad Gita discuss self-discipline as a way to control emotions

and instincts, guiding one toward the ideal of a Sthitaprajna (a person of steady wisdom).

#### Language: The Fabric of Thought

Russell emphasizes that language plays a crucial role in how we think and form concepts about the world. He argues that words are not merely labels for objects or ideas but fundamental structures for thought. Language enables abstract thinking and reasoning, distinguishing humans from other animals. The Rigveda contains several hymns dedicated to Vak (speech), and the Taittiriya Upanishad considers speech a vital aspect of human experience. The Nyaya Sutras, a foundational text on Indian logic and epistemology, analyze the relationship between language and thought, explaining how linguistic structures shape reasoning and clarity of thought.

#### Consciousness as a Fluid Process

Russell challenges the idea of consciousness as a fixed entity. Instead, he views it as a dynamic process linked to ongoing mental events. Consciousness is not a "permanent state" that exists independently; rather, it is a continuous, fluid, and dynamic stream of thoughts, perceptions, and emotions. The Brihadaranyaka Upanishad's famous statement "Neti, Neti" (Not this, Not that) suggests that understanding the deeper truth requires a continuous process of inquiry. The Katha Upanishad, in the dialogue between Nachiketa and Yama, describes the soul as eternal and unchanging, attainable through self-inquiry and spiritual experience. The Vedanta philosophy, particularly through Shankaracharya's teachings, describes consciousness as the fundamental essence underlying all experiences and as infinite in nature.

## Behaviorism and the Study of the Mind

In The Analysis of Mind, Russell engages with behaviorism, which focuses on observable behavior rather than internal mental states. He acknowledges the limitations of behaviorism but sees value in studying the relationship between external actions and internal mental processes to understand the mind. Vedic and post-Vedic literature—particularly the Upanishads, the Bhagavad Gita, Samkhya Darshan, and the Yoga Sutras—deeply analyze behavior and the mind. Controlling the mind and understanding its tendencies are seen as essential for living a balanced life. The Yoga Sutras of Patanjali emphasize ethical discipline (Yama) and personal observances (Niyama) as foundational steps for influencing mental states.

## The Illusion of Free Will

Russell questions the concept of free will, arguing that our choices are influenced by past experiences, external stimuli, and psychological conditioning. While we may feel we are making independent decisions, much of our behavior is shaped by factors beyond our conscious control. The Bhagavad Gita similarly uses the metaphor of a chariot, where the mind is likened to the reins, and the senses (desires) are like the horses pulling the chariot. Vedantic philosophy generally supports the idea that uncontrolled desires hinder a balanced life, advocating self-regulation as a means to transcend conditioning. The Yoga Sutras also describe how human behavior is driven by mental fluctuations (Vrittis).

## The Mind as a Collection of Events

Rather than seeing the mind as a singular entity, Russell suggests it is better understood as a series of interconnected events, including perceptions, emotions, thoughts, and memories. The mind is not a substance but a collection of interrelated

experiences that create the sense of being conscious. In contrast, Samkhya Darshan considers the mind a subtle instrument that processes sensory information in coordination with the intellect.

## Conclusion

'The Analysis of Mind' invites readers to reconsider cognition, emotion, and consciousness through a blend of philosophy and science. Russell dismantles the myth of a monolithic mind, revealing it as a dynamic interplay of memory, language and instinct. When viewed alongside Vedas, his work bridges ancient and modern inquiries into human nature, urging a deeper understanding of mental processes for personal and collective well-being. This synthesis underscores that while methods and metaphors differ across eras, the quest to comprehend the mind remains humanity's shared odyssey.

I would like to conclude this review with a shloka from Katha Upanishad;

“आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।  
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥”

This verse teaches that life is like a journey, where the body is just a vehicle, the senses must be tamed, the mind must be controlled and the intellect must be sharp. Only then can one reach the ultimate truth, realizing the divine Self. A wise person does not let their chariot be driven by uncontrolled desires but takes charge, ensuring that their life moves toward higher wisdom and ultimate freedom.

**Arhat Wakode**

Chief Manager

Travel & Hospitality Dept.

Head Office





## ‘बीस चौबीस’ का फिल्मी सफर

“सिनेमा वह दर्पण है जिसमें समाज अपनी आत्मा को देखता है, संभावनाओं के सपने संजोता है और वर्तमान के सत्य से रूबरू होता है। कैमरे का लेंस जब कहानी को रिकॉर्ड करता है तो वह उस समय की प्रचलित सामाजिक-सांस्कृतिक भावना को भी रिकॉर्ड करता है। इसलिए कहते हैं कि फिल्म का एक फ्रेम पूर्वाग्रहों को चुनौती दे सकता है, सहानुभूति को जागृत कर सकता है और क्रांति को प्रज्वलित कर सकता है। सिनेमा में समाज के आचरण को आकार देने की शक्ति होती है। सिनेमा हमें अंधकार में प्रकाश सिखाता है। करुणा, समझ और मानवता के साझा अनुभव बताता है। फिल्में उन लोगों को आवाज देती हैं जिनकी कोई आवाज नहीं है, उन चेहरों को पहचान देती हैं जो अदृश्य हैं और उन लोगों को उम्मीद देती हैं जो परिवर्तन में विश्वास करते हैं। सिनेमा मनोरंजन मात्र नहीं है, यह मानवता का प्रतिबिंब है।”

साल बीस चौबीस (2024) भारतीय सिनेमा के लिए विविधता और नवाचार से भरपूर रहा। इस वर्ष कई ऐसी फिल्में रिलीज़ हुईं जिन्होंने न केवल बॉक्स ऑफिस पर सफलता हासिल की, बल्कि अपने संदेश, संगीत और मनोरंजन से दर्शकों के दिलों में खास जगह बनाई। जनवरी में ‘मैं अटल हूँ’ फिल्म की रिलीज़ के साथ साल की शुरुआत एक जीवनी आधारित सिनेमा से होती है, इस फिल्म में अभिनेता पंकज त्रिपाठी पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की बहुआयामी शिथिलता को पर्दे पर जीवंत करते दिखाई पड़ते

हैं। यह फिल्म कारगिल युद्ध, पोखरण परीक्षण जैसे चुनौतीपूर्ण कालखंड में देश के मजबूत नेतृत्व को पर्दे पर उतारने में कामयाब रही। गणतंत्र दिवस के अवसर पर सिद्धार्थ आनंद के निर्देशन में बनी पहली फिल्म ‘फ़ाइटर’ रिलीज़ हुई। यह फिल्म एक्शन से भरपूर देशभक्ति फिल्म है। इसमें अभिनेता ऋतिक रोशन, अनिल कपूर, दीपिका पादुकोण ने भारतीय वायुसेना के शौर्य भरे कारनामों से दर्शकों को अभिभूत किया। फरवरी के सुहाने मौसम में बड़े पर्दे पर आई हास्य-प्रेमकथा (रॉमकॉम) फिल्म ‘कुछ खट्टा हो जाये’ ने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। इस फिल्म में दो युवा अपने सपनों को पूरा करने की जद में सामाजिक जीवन की उथल-पुथल से जूझते हुए, अपने प्रेम को मजबूत बनाए रखने का संघर्ष करते नज़र आए। इस फिल्म में रूढ़िवादी समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य के सहारे कटाक्ष किया गया।

फरवरी के अंतिम सप्ताह में आई फिल्म ‘आर्टिकल 370’ राजनीतिक ड्रामा फिल्म है जो जम्मू-कश्मीर को विशेष स्वायत्तता प्रदान वाले भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 को समाप्त करने की कहानी को दर्शाती है। आदित्य सुहास द्वारा निर्देशित और यमी गौतम अभिनीत इस फिल्म की कहानी कश्मीर के निवासियों के संघर्षों को दिखाती है, जो उग्रवाद, राजनीतिक टकराव और भारत के साथ एकीकरण की चुनौतियों का सामना करते हैं। फिल्म देशभक्ति, पहचान और समझौते जैसे विषयों को उजागर करते हुए सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल को दर्शाती है। मार्च माह की शुरुआत व्यंग्यात्मक ड्रामा फिल्म ‘कागज़ 2’ से होती है जो भारत में नौकरशाही और भ्रष्टाचार की कहानी को विस्तार देती है, जिसमें टूट चुकी व्यवस्था के खिलाफ आम लोगों को संघर्ष करते दिखाया गया है। कहानी एक ऐसे व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमती है जिसे सरकारी रिकॉर्ड में झूठा मृत घोषित कर दिया गया है और वह अपनी पहचान वापस पाने के लिए लड़ता है। भ्रष्ट व्यवस्था से जूझते हुए, फिल्म उसकी भावनात्मक, कानूनी और सामाजिक चुनौतियों को उजागर



करती है। यह मानवीय जज़्बे की ताकत और लालफीताशाही की विडंबनाओं को दर्शाने वाली एक प्रेरणादायक कहानी है।

होली से पहले आई फिल्म 'मर्डर मुबारक' एक सस्पेंस-थ्रिलर है जो एक हाई-सोसायटी पार्टी के दौरान हुए रहस्यमय मर्डर की कहानी पर आधारित है। कहानी में एक प्रभावशाली परिवार के गहरे राज़, धोखे और साजिशें उजागर होती हैं। जैसे-जैसे पुलिस और जांच अधिकारी अपराध की गुत्थी सुलझाने की कोशिश करते हैं, हर किरदार संदिग्ध बनता



जाता है। फिल्म रहस्य, रोमांच और चौंकाने वाले ट्विस्ट से भरपूर है, जो अंत तक दर्शकों को बांधे रखती है। 'स्वातंत्र्य वीर सावरकर' एक बायोपिक है जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर के जीवन पर आधारित है। फिल्म उनके बचपन से लेकर स्वतंत्रता के लिए उनके संघर्ष, अदम्य साहस और विवादों से भरे राजनीतिक जीवन को दर्शाती है। सावरकर के अंडमान की जेल में बिताए गए कठिन समय और उनकी विचारधारा को दिखाते हुए, यह फिल्म उनके बलिदान और दृढ़ता को उजागर करती है। यह कहानी स्वतंत्रता संग्राम के अनकहे पहलुओं को उजागर करती है।

एक और बायोपिक 'अमर सिंह चमकीला' के साथ अप्रैल की शुरुआत होती है जो पंजाबी संगीत जगत के मशहूर और विवादित गायक अमर सिंह चमकीला के जीवन पर आधारित है। फिल्म उनकी गरीब पृष्ठभूमि, संघर्ष, और उन्हें

पंजाब का एल्विस प्रेस्ली बनाने वाले गानों की यात्रा को दर्शाती है। चमकीला के गाने समाज के यथार्थ को दिखाते थे, लेकिन उनके बोलड अंदाज ने उन्हें विवादों और दुश्मनों के घेरे में ला दिया। फिल्म उनकी असाधारण सफलता और 1988 में उनकी रहस्यमयी हत्या की कहानी को उजागर करती है। अप्रैल के मध्य में रिलीज़ हुई फिल्म 'काम चालू है' एक कॉमेडी-ड्रामा फिल्म है, जो आम आदमी की रोज़मर्रा की जिंदगी में व्याप्त भ्रष्टाचार और नौकरशाही पर व्यंग्य कसती है। कहानी एक छोटे शहर के सामान्य आदमी के इर्द-गिर्द घूमती है, जो सरकारी काम करवाने के लिए अधिकारियों की लालफीताशाही और रिश्तखोरी से जूझता है। हास्य और व्यंग्य के माध्यम से फिल्म सामाजिक मुद्दों को उजागर करती है और व्यवस्था की खामियों पर सवाल उठाती है। यह संघर्ष, धैर्य और व्यवस्था बदलने की उम्मीद की प्रेरक कहानी है।

मई की भीषण गर्मी में एक सटायर ड्रामा फिल्म 'कर्तम भुगतम' रिलीज़ होती है जो इंसान के कर्म और उसके परिणामों के सिद्धांत को मजेदार अंदाज में पेश करती है। कहानी एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमती है, जो सफलता पाने के लिए शॉर्टकट्स अपनाता है लेकिन जल्द ही उसके गलत फैसलों के नतीजे सामने आने लगते हैं। फिल्म में हास्य और भावनात्मक उतार-चढ़ाव के जरिए कर्म और नैतिकता का गहरा संदेश दिया गया है। यह मनोरंजन के साथ एक सीख देने वाली कहानी है, जो दर्शकों को सोचने पर मजबूर करती है। जून में एक प्रेरणादायक स्पोर्ट्स ड्रामा 'चंदू चैंपियन' दर्शकों को रिझाने में कामयाब होती है। यह एक छोटे शहर के लड़के चंदू की कहानी है, जो अपनी कठिनाइयों के बावजूद राष्ट्रीय स्तर का एथलीट बनने का सपना देखता है। फिल्म चंदू के संघर्ष, मेहनत और आत्मविश्वास की यात्रा को दर्शाती है, जिसमें वह अपने जीवन के बड़े संघर्षों से जूझते हुए खेल में अपनी पहचान बनाता है। इसके अलावा, फिल्म में सामाजिक और पारिवारिक मुद्दों की भी गहरी छाप है, जो उसकी खेल यात्रा को प्रभावित करती है। यह फिल्म आत्मविश्वास, समर्पण और संघर्ष की प्रेरणादायक कहानी है।

अगस्त के रिमझिम भरे मौसम में 'स्त्री 2' नामक हॉरर कॉमेडी फिल्म बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा देती है, जो

2018 की हिट फिल्म 'स्त्री' का सीकल है। फिल्म में एक बार फिर से आत्मा स्त्री की कहानी सामने आती है, जो एक छोटे शहर में पुरुषों को गायब करने के लिए फिर से लौट आती है। चतुर और डरपोक लोग अब और भी बड़े संघर्षों का सामना करते हैं, जब वे स्त्री के रहस्यमय प्रभाव से बचने के तरीके खोजते हैं। यह फिल्म हास्य, डर और सस्पेंस का एक अच्छा मिश्रण है, जो दर्शकों को एक बार फिर से भयावह और मजेदार अनुभव देती है। सितंबर में आई फिल्म 'जो तेरा है वो मेरा है' एक रोमांटिक ड्रामा फिल्म है, जो एक ऐसे जोड़े की कहानी है, जिनकी जिंदगी में प्यार, धोखा और संघर्ष भरे हुए हैं। वो अपने रिश्ते में विश्वास और समझ के साथ आगे बढ़ने की कोशिश करता है, लेकिन कुछ अप्रत्याशित घटनाएँ उनकी खुशियों को संकट में डाल देती हैं। यह फिल्म उन जटिल भावनाओं और रिश्तों को दर्शाती है जो प्यार के रास्ते में आते हैं। कहानी एक दिलचस्प मोड़ पर खत्म होती



है, जहाँ प्यार और सच्चाई के बीच टकराव होता है।

अक्तूबर में दशहरे के आसपास रिलीज़ हुई फिल्म 'जिगरा' एक एक्शन-ड्रामा है। यह एक ऐसे युवक की कहानी है जो अपने परिवार की सुरक्षा और सम्मान के लिए संघर्ष करता है। फिल्म में मुख्य पात्र अपनी खोई हुई पहचान और अपने अतीत से जूझते हुए प्रतिशोध की राह पर चलता है। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, उसे अपने दुश्मनों और अंदरूनी संघर्षों का सामना करना पड़ता है। यह फिल्म साहस, निष्ठा और परिवार के प्रति प्यार की एक प्रेरक कहानी है, जिसमें भावुकता और एक्शन का मिश्रण है। नवंबर की शुरुआत एक हॉरर कॉमेडी फिल्म 'भूल भुलैया 3' के साथ होती है, जो भूतिया रहस्यों और मनोवैज्ञानिक थ्रिलर से भरी हुई है। फिल्म में एक नई कहानी सामने आती है, जहाँ मुख्य

पात्र एक पुरानी हवेली के रहस्यों को सुलझाने के लिए एक बार फिर से जुटते हैं। इस बार, उन्हें एक और खौफनाक आत्मा का सामना करना पड़ता है, जो अपने रहस्यों को छुपाए हुए है। फिल्म में हास्य और डर का शानदार मिश्रण है, जो दर्शकों को सस्पेंस और मनोरंजन से बांधे रखता है। साल का अंत क्रिसमस पर रिलीज़ हुई एक ड्रामा फिल्म 'बेबी जॉन' के साथ होता है, जो एक छोटे बच्चे की अनदेखी ताकत और उसके आसपास के संघर्षों की कहानी बताती है। फिल्म में, बच्चा अपने परिवार की सुरक्षा और आत्मसम्मान के लिए कई कठिन परिस्थितियों का सामना करता है। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, वह अपनी मासूमियत और साहस से उन लोगों को मात देता है जो उसे दबाने की कोशिश करते हैं। यह फिल्म दिल को छूने वाली है, जो दर्शाती है कि असल ताकत कभी आकार से नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और हिम्मत से आती है।

बीस चौबीस (2024) भारतीय सिनेमा के लिए कई मायनों में यादगार रहा। यह साल नए प्रयोगों, सामाजिक विषयों पर केंद्रित फिल्मों और मनोरंजन के नए आयामों को प्रस्तुत करने वाला वर्ष साबित हुआ। सिनेमा, जो हमेशा से समाज का दर्पण रहा है, इस वर्ष भी समाज की बदलती सोच, टेक्नोलॉजी और युवाओं की बदलती प्राथमिकताओं को दर्शाने में सफल रहा। 2024 में कई फिल्में ऐसी रहीं जिन्होंने सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। शिक्षा, पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण और समुदाय से जुड़े विषयों पर बनी फिल्मों ने दर्शकों का ध्यान खींचा। यह साल भारतीय फिल्म उद्योग के लिए न केवल व्यवसायिक रूप से सफल रहा, बल्कि दर्शकों की बदलती रुचियों और समाज की अपेक्षाओं को समझने में भी सहायक सिद्ध हुआ। इस वर्ष की उपलब्धियाँ यह साबित करती हैं कि भारतीय सिनेमा मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक बदलाव का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

भास्कर सिंह रावत

राजभाषा अधिकारी

प्रधान कार्यालय





# वार छोड़ ना यार

फ़राज़ हैदर द्वारा निर्देशित 'युद्ध-कॉमेडी' फ़िल्म "वार छोड़ ना यार" देखने का अवसर मिला, जिसमें शरमन जोशी, सोहा अली खान, जावेद जाफ़री और अन्य कलाकारों ने अभिनय किया है। यह फ़िल्म हास्य से भरपूर होते हुए भी 'युद्धों को बंद करने' का एक गहरा संदेश देती है। पटकथा में दोनों पक्षों के सैनिकों के मानवीय पहलू को दर्शाया गया है, उन्हें दुश्मनों के रूप में नहीं बल्कि परिवार वाले, सपने देखने वाले भावुक लोगों के रूप में चित्रित किया गया है। फ़िल्म देखने पर मुझे अहसास हुआ कि युद्ध वास्तव में जन-जीवन को, समाज को यहाँ तक कि राष्ट्रों को बर्बाद कर देते हैं। हालाँकि फ़िल्म में युद्ध को व्यंग्यात्मक एवं हास्यप्रद रूप में प्रदर्शित किया गया था, लेकिन मूल संदेश में छिपा सत्य बहुत गहरा था। यह लेख इस फ़िल्म द्वारा मेरे अंदर जागृत भावनाओं को व्यक्त करने और युद्ध की कठोर वास्तविकताओं, इसके प्रभावों और शांति की आशा पर बात करने का एक प्रयास है।

21वीं सदी विनाशकारी युद्धों से पटी पड़ी है, जिनमें से प्रत्येक युद्ध ने दुनिया को बुरी तरह प्रभावित किया है और भू-राजनीति को नया रूप दिया है। निम्नलिखित कुछ संघर्षों का उल्लेख किया जाना महत्वपूर्ण है:

## 1. अफ़गानिस्तान में युद्ध (2001-2021):

11 सितंबर के हमलों के बाद अफ़गानिस्तान पर अमेरिका के नेतृत्व में आक्रमण शुरू हुआ था। तालिबान शासन और अल-कायदा को खत्म करने के उद्देश्य से यह युद्ध दो दशकों तक चला। इस युद्ध में हवाई हमलों, विद्रोही हमलों और युद्ध के कारण उत्पन्न सामान्य अस्थिरता के कारण लाखों नागरिकों ने अपनी जान गंवाई। लाखों लोग विस्थापित हुए, जिससे दुनिया का सबसे बड़ा शरणार्थी संकट पैदा हो गया। बुनियादी ढाँचा और बुनियादी सेवाएँ ध्वस्त हो गईं, जिससे वह देश

गरीबी और अराजकता में डूब गया।

## 2. इराक युद्ध (2003-2011):

अमेरिका ने अपनी बदनामी रोकने के लिए, सामूहिक विनाश के हथियार होने का हवाला देते हुए, इराक पर आक्रमण को सही ठहराने की कोशिश कर रहा था। सद्दाम हुसैन का शासन भले ही खत्म हो गया हो, लेकिन युद्ध ने पूरे देश और क्षेत्र को अस्थिर कर दिया है। इस युद्ध के कारण इराक में सांप्रदायिक हिंसा भड़क उठी, जिससे लाखों नागरिक मारे गए। फल्लुजा और मोसुल जैसे शहर संघर्ष में पूरी तरह नष्ट हो गए। इराक अभी भी राजनीतिक रूप से अस्थिर है, जिसमें संप्रदायों के बीच गहरी खाई है और हिंसा जारी है।

## 3. सीरियाई गृह युद्ध (2011-वर्तमान):

अरब स्प्रिंग में शांतिपूर्ण विरोध के रूप में शुरू हुई स्थिति कई गुटों को शामिल करते हुए एक क्रूर गृह युद्ध में बदल गई। असद शासन, विद्रोही समूह और आईएसआईएस जैसे चरमपंथी संगठन इस युद्ध में संघर्षरत हैं। 500,000 से अधिक नागरिक मारे गए हैं, और लाखों लोग आंतरिक और बाहरी रूप से विस्थापित हुए हैं। अलेप्पो और होम्स जैसे पूरे शहर मलबे में बदल गए हैं। युद्ध ने इस देश को आतंकवाद का प्रजनन स्थल बना दिया है, जिससे वैश्विक सुरक्षा प्रभावित हुई है। सीरिया गंभीर मानवीय संकट के दौर से गुजर रहा है, यहाँ विशेष रूप से अकाल और लाखों लोगों के लिए बुनियादी सुविधाएँ, अस्पताल, स्कूल आदि सहित बुनियादी ढाँचा नष्ट हो गया है।

## 4. यूक्रेन - रूस युद्ध

इसने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के सबसे बड़े युद्धों में से एक को जन्म दिया। इसकी वजह से पूरा यूरोप अस्थिरता की



दहलीज़ पर पहुँच गया है। हजारों नागरिक और सैनिक मारे गए हैं, लाखों लोग विस्थापित हुए हैं। रूसी सेना ने यूक्रेन के अधिकांश शहरों पर बमबारी की है, विशेष रूप से यूक्रेन के मारियुपोल और खार्किव जैसे शहरों को उजाड़ दिया है। युद्ध ने वैश्विक खाद्य और ऊर्जा आपूर्ति को प्रभावित किया है। इसने दुनिया भर में आर्थिक संकट पैदा कर दिया है।

## 5. फिलिस्तीन-इज़राइल संघर्ष:

इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष दशकों से चल रहा है। पिछले कुछ वर्षों में यह संघर्ष तेज हुआ है। संघर्ष का केंद्र बिंदु गाजा है। बमबारी और नाकेबंदी के कारण हजारों फिलिस्तीनी नागरिकों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। गाजा पानी, बिजली और चिकित्सा आपूर्ति की कमी के कारण गंभीर मानवीय चुनौतियों से ग्रस्त है। इस संघर्ष के कारण हिंसा का चक्र दोनों पक्षों के बीच दुश्मनी को और गहरा कर रहा है।

## युद्धों की कीमत और उसका भुगतान:

मानवीय कीमत: युद्ध की कीमत लड़ाई या भौगोलिक क्षेत्रों की जीत से नहीं बल्कि भरे कब्रिस्तानों, विधवाओं के आंसुओं, जीवित बचे घायल और भावुक लोगों से तय होती है। युद्धों में परिवार बिखर जाते हैं और पीढ़ियां हिंसा और आघात में खत्म हो जाती हैं। किसी भी युद्ध की महिमामई महानता टूटे हुए जीवन, खोए हुए भविष्य, बुझी हुई आशाओं और खामोश हो चुकी युवा उम्मीदों के भार को नहीं उठा सकती।



**आर्थिक कीमत:** देश स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा या गरीबी उन्मूलन के बजाय हथियारों और सैन्य अभियानों पर खर्च करते हैं। युद्ध की कीमत खाली हुए खजानों, खोए हुए

आविष्कारों, और उन सपनों के टूटने से चुकाई जाती है जो एक बेहतर भविष्य बना सकते थे। युद्ध केवल धन-धान्य से ही नहीं बल्कि अवसरों से भी दिवालिया बनाता है, क्योंकि हर चली हुई गोली स्कूलों, अस्पतालों और अनकही उम्मीदों से चुराई गई मुद्राएँ हैं।

**पर्यावरणीय कीमत:** युद्ध उस धरती को जला देता है जिसके लिए वह लड़ा जाता है, पीछे छोड़ देता है बंजर खेत, जहरीली नदियां, और ऐसा वातावरण जो केवल विनाश की गवाही देता है। बम केवल जमीन में गड्ढे नहीं करते, बल्कि पारिस्थितिक तंत्र के नाजुक संतुलन में ऐसे घाव छोड़ते हैं जिन्हें ठीक होने में दशकों लग जाते हैं। विस्फोटों का धुआं केवल आसमान को काला नहीं करता, यह महासागरों को प्रदूषित करता है, मिट्टी को दूषित करता है। तोपों के शांत होने के बाद भी प्रकृति पर उनके घाव सदियों तक रिसते रहते हैं।

**सांस्कृतिक विरासत पर प्रभाव:** युद्ध केवल जीवन को नष्ट नहीं करते, बल्कि ये विरासत को भी मिटा देते हैं, सदियों पुरानी संस्कृति को खंडहर में बदल देते हैं और मानवता की कहानियों को खामोशी में दबा देते हैं। युद्ध की असली त्रासदी जीवन की हानि से भी आगे बढ़कर स्मृतियों की हानि में है, जब पुस्तकालय जलते हैं, स्मारक गिरते हैं, और सभ्यताओं की आत्मा खो जाती है, बर्बाद हुआ हर एक धर्मस्थल, लूटी गई कलाकृति या जली हुई पांडुलिपि मानवता के साझा इतिहास की किताब से नष्ट हुआ एक पृष्ठ है।

**युद्ध रोकने के प्रयास:** दूसरे विश्व युद्ध के बाद भविष्य में ऐसी किसी भी तबाही को रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की स्थापना की गई थी। संयुक्त राष्ट्र एवं अनेक अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा युद्धों को रोकने और शांति स्थापित करने के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं जैसे कि-

➤ राष्ट्रों ने राजनयिक चैनल, दूतावास और शांति वार्तालाप स्थापित किए हैं ताकि संघर्षों को हिंसा के बिना हल किया जा सके। संयुक्त राष्ट्र जैसे संस्थान युद्धों को रोकने के लिए मध्यस्थता करते हैं।

➤ अंतरराष्ट्रीय संधियाँ की गई हैं। जिनेवा संधियाँ, परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) और शस्त्र नियंत्रण समझौतों



जैसे अनुबंध युद्ध को नियंत्रित करने और संघर्षों को बढ़ने से रोकने का प्रयास करते हैं।

➤ शांति स्थापना मिशन बनाए हैं। संयुक्त राष्ट्र और अन्य संगठन संघर्ष क्षेत्रों में शांति स्थापना बलों को तैनात करते हैं ताकि संघर्ष विराम बनाए रखा जा सके और नागरिकों की रक्षा की जा सके।

➤ आर्थिक सहयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। व्यापार समझौतों जैसे यूरोपीय संघ और क्षेत्रीय गठबंधनों के माध्यम से आर्थिक परस्पर निर्भरता युद्ध की संभावना को कम करती है और आपसी लाभ को बढ़ावा देती है।

➤ सांस्कृतिक और शिक्षा के आदान-प्रदान के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। सांस्कृतिक समझ, वैश्विक नागरिकता और शांति के बारे में शिक्षा को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम देशों के बीच सहानुभूति और सहयोग को प्रोत्साहित करते हैं।

➤ निरस्त्रीकरण के प्रयास किए जा रहे हैं। परमाणु निरस्त्रीकरण और शस्त्र भंडार को कम करने के आंदोलनों का उद्देश्य विनाशकारी संघर्षों को रोकना है।

➤ संघर्ष समाधान प्रशिक्षण दिया जाता है। जमीनी स्तर की पहल समुदायों को वार्तालाप, मध्यस्थता और अहिंसात्मक संवाद में प्रशिक्षित करती है ताकि स्थानीय विवादों को बढ़ने से पहले सुलझाया जा सके।

➤ जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं। शांति आंदोलन, वैश्विक अभियान और एमनेस्टी इंटरनेशनल तथा अंतरराष्ट्रीय रेड क्रॉस जैसे संगठन अहिंसा का प्रचार करते हैं और युद्ध

की मानवीय कीमत को उजागर करते हैं।

➤ मानवीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। युद्ध प्रभावित क्षेत्रों का पुनर्निर्माण, शरणार्थियों का समर्थन और राहत प्रदान करना संघर्षों को फिर से भड़कने से रोकता है और मेल-मिलाप को बढ़ावा देता है।

➤ वैश्विक शांति दिवस मनाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस जैसे कार्यक्रम सह-अस्तित्व के महत्व की याद दिलाते हैं और शांति के लिए सामूहिक कार्रवाई को प्रोत्साहित करते हैं।

## “वार छोड़ ना यार”

महात्मा गांधीजी ने बहुत सही कहा था, “आंख के बदले आंख लेने से पूरी दुनिया अंधी हो जाएगी।” नेल्सन मंडेला ने उनके शब्दों को दोहराया “यदि आप अपने दुश्मन के साथ शांति बनाना चाहते हैं, तो आपको अपने दुश्मन के साथ मिलकर काम करना होगा, फिर वह आपका साथी बन जाता है।” हमें याद रखना चाहिए कि युद्धों में विजेता नहीं होते; युद्ध केवल घाव छोड़ते हैं। आपसी सम्मान, खुली बातचीत और करुणा को बढ़ावा देकर, हम एक शांतिपूर्ण दुनिया की नींव रख सकते हैं। जैसा कि जॉन एफ कैनेडी ने एक बार कहा था, “मानव जाति को युद्ध को खत्म करना होगा, अन्यथा युद्ध मानव जाति को खत्म कर देगा।” युद्धरहित दुनिया कल्पना से परे लगती है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इसे हासिल करना असंभव है। इसकी शुरुआत बहुत छोटे-छोटे कदमों से हो सकती है। शक्ति के बजाय मूल्य, प्रतिस्पर्धा की बजाय सहयोग और घृणा की बजाय प्रेम, को महत्व देना होगा। हम सभी कह सकते हैं, “वार, छोड़ो न यार” और शांति के उज्वल भविष्य की ओर देख सकते हैं।

सिराज खान  
अधिकारी  
सीईबीबी विभाग  
प्रधान कार्यालय



# डिजिटल अरेस्ट

हाल ही में साइबर धोखाधड़ी का एक नया स्वरूप सामने आया है, जिसे “डिजिटल अरेस्ट” का नाम दिया गया है। परिणामस्वरूप “डिजिटल अरेस्ट” की आड़ में व्यक्तियों और व्यवसायों को करोड़ों रुपये की वित्तीय हानि हो चुकी है। डिजिटल अरेस्ट स्कैम में, धोखेबाज पीड़ितों को धोखा देने के लिए कानून प्रवर्तन अधिकारियों का भेष धारण करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने इस स्कैम को लेकर जनता को चेतावनी भी जारी की है, उनसे आग्रह किया है कि ऐसी किसी भी घटना की सूचना साइबर हेल्पलाइन (1930) पर दें। इसके अतिरिक्त, **कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पॉंस टीम ऑफ इंडिया** (सीईआरटी-इन) ने उन तरीकों की एक सूची प्रदान की है जिनके द्वारा ये धोखेबाज डिजिटल अरेस्ट स्कैम सहित ऑनलाइन स्कैम करते हैं। जैसे- पीड़ितों को एक फोन कॉल, ई-मेल या संदेश प्राप्त होता है जिसमें दावा किया जाता है कि उनकी पहचान की चोरी या मनी लॉनड्रिंग जैसी अवैध गतिविधियों के लिए जांच चल रही है।

## डिजिटल अरेस्ट कैसे काम करता है?

डिजिटल अरेस्ट स्कैम में, अपराधी कानून प्रवर्तन अधिकारियों जैसे कि सीबीआई अधिकारी, आयकर अधिकारी, सीमा शुल्क एजेंट या पुलिस इंस्पेक्टर के रूप



में पेश आते हैं, और फोन कॉल के माध्यम से पीड़ितों के साथ संपर्क शुरू करते हैं। इसके बाद, वे अनुरोध करते हैं कि पीड़ित व्हाट्सएप और स्काइप जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से वीडियो कॉल पर स्विच करें। स्कैमर्स तब पीड़ितों को वित्तीय कदाचार, कर चोरी या अन्य कानूनी उल्लंघन जैसे विभिन्न कारणों का हवाला देते हुए **डिजिटल अरेस्ट वारंट** के साथ धमकी देते हैं। कुछ मामलों में, ये धोखेबाज पीड़ितों को यह समझाने के लिए एक पुलिस स्टेशन जैसा सेट-अप बनाते हैं कि कॉल वैध है। “उनका नाम केस से हटाने”, “जांच में सहायता करने”, या “वापसी योग्य (रिफंडबल) की आड़ में सुरक्षा जमा/एस्करो खाता”, व्यक्तियों को निर्दिष्ट बैंक खातों या यूपीआई आईडी में बड़ी रकम स्थानांतरित करने के लिए मजबूर किया जाता है। एक बार जब पीड़ित अनुपालन करते हैं और भुगतान कर देते हैं, तो स्कैमर गायब हो जाते हैं, जिससे पीड़ितों को वित्तीय नुकसान और संभावित पहचान की चोरी का सामना करना पड़ता है।

## डिजिटल अरेस्ट स्कैम का शिकार बनने से कैसे बचें?

अपने आप को धोखाधड़ी से बचाने का सबसे महत्वपूर्ण तरीका **जागरूक** होना है। ऐसे अपराधों के प्रति हमेशा सतर्क रहें। आपको डिजिटल अरेस्ट स्कैम से बचाने के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं:

- नकली अधिकारियों के कॉल पर संदेह करें जो दावा करते हैं कि आप मुसीबत में हैं। यह याद रखना हमेशा महत्वपूर्ण होता है कि वास्तविक कानून प्रवर्तन एजेंसी के अधिकारी कभी भी भुगतान या बैंकिंग विवरण नहीं मांगेंगे।
- साइबर अपराधियों द्वारा की जाने वाली “दबाव की रणनीति” पर ध्यान न दें, जो “तात्कालिकता की भावना” “पैदा करके त्वरित कार्रवाई चाहते हैं।
- यदि आपको कॉल के बारे में संदेह है, तो सीधे उस संबंधित एजेंसी से संपर्क करके उनकी पहचान सत्यापित करें



जिसका वे उल्लेख कर रहे हैं। शांत रहने की कोशिश करें और घबराएं नहीं।

- व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से बचें और फोन या वीडियो कॉल पर संवेदनशील व्यक्तिगत या वित्तीय विवरणों का खुलासा कभी न करें, खासकर अज्ञात नंबरों पर।

- याद रखें, सरकारी एजेंसियां आधिकारिक संचार के लिए व्हाट्सएप या स्काइप जैसे प्लेटफार्मों का उपयोग नहीं करती हैं।

- अगर आपको लगता है कि आपके साथ स्कैम किया जा रहा है, तो स्थानीय पुलिस या साइबर अपराध अधिकारियों को घटना की रिपोर्ट करना कभी न भूलें।

- जनता के लिए सीईआरटी-इन की सलाह में कहा गया है कि इस “उभरते साइबर खतरे” से खुद को बचाने के लिए “सतर्क और सूचित” रहना महत्वपूर्ण है।

### साइबर ठगी के अन्य विभिन्न प्रचलित प्रकार-

**व्हाट्सएप कॉल :** अक्सर व्हाट्सएप डीपी पर पुलिस



अधिकारी की फोटो लगाकर धमकी भरे कॉल आते हैं। ऐसे कॉल को रिसीव न करें। गैंगस्टर भी इसका इस्तेमाल करते हैं।

**बैंक डिटेल :** कभी भी बैंक या अन्य कोई सरकारी एजेंसी ऑनलाइन या कॉल करके बैंक खाते से जुड़ी जानकारी नहीं मांगती हैं। कभी भी अपना ओटीपी नंबर साझा न करें।

**लिंक को क्लिक करने से बचें :** लॉटरी या गेम के जरिए लाखों कमाने या अन्य किसी प्रलोभन देने वाले लिंक को क्लिक न करें। आपका मोबाइल हैक किया जा सकता है।

**सेक्सटॉर्शन :** अनजान नंबर से वीडियो कॉल यदि रिसीव कर लिया है और उस पर अश्लील वीडियो नजर आए तो तुरंत कट कर दें और डरने की बजाय स्थानीय थाने में रिपोर्ट दें। साइबर ठगी का शिकार होने पर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर तुरंत कॉल करें व थाना पुलिस में रिपोर्ट दें।

### सजा का प्रावधान -

साइबर ठगी के मामलों में सात वर्ष की सजा का प्रावधान है, जिसमें आईटी एक्ट की धारा में कार्रवाई होती है। इस अधिनियम के तहत अपराध प्रमाणित होने पर आरोपी को 3 से 7 वर्ष तक की सजा व आर्थिक दंड का प्रावधान है।

नए कानून के तहत धारा 318 में भी कार्रवाई की जा सकती है।

इसलिए साइबर ठगों से बचने के लिए खुद का जागरूक होना भी आवश्यक है जिससे इन्हें शलाखों के पीछे भेजा जा सके।

श्रीमती स्वाती सिंह

मुख्य प्रबंधक, ऋण निगरानी विभाग

बैंक ऑफ़ इंडिया

सूरत आंचलिक कार्यालय





# Convening of Parliamentary Committee Visits in Public Sector Banks

Public Sector Banks (PSBs), being public sector entities, are accountable to the public at large. Thus, our constitutional and legal framework provides various parliamentary committees with robust powers to scrutinize PSUs and PSBs. Parliamentary committee visits are integral to improving the efficiency, accountability, and overall functioning of PSBs. These visits not only ensure that PSBs fulfil their mandate but also provide an avenue for continuous policy review and development, which benefits the public and strengthens democratic governance. Parliamentary committee visits to Public Sector Banks (PSBs) are vital for fostering transparency and governance in the public sector. These visits serve several important purposes, contribute to the effective functioning of PSBs, and provide a platform for the Central Government to gather data on implementation of various welfare schemes. Some important Committees that visits PSBs are Parliamentary Committee on Industry, Official Language, Commerce, Urban/Rural Development, Labour, Textiles and Skill Development etc.

Convening of Parliamentary Committee Visits to Public Sector Banks (PSBs) is a highly sensitive and structured task that requires meticulous planning, coordination, and adherence to protocol. Here's a comprehensive guide:

## 1. Pre-Visit Planning

### a. Understand the Purpose of the Visit

- Identify the objective of the Parliamentary Committee Visit (e.g., Office Inspection, Policy Review, and Issue Resolution).

- Obtain the committee's agenda and specific points of interest.
- Concerned functional department of the bank should be activated and should start collating data pertaining to agenda items.

### b. Assign a Core Coordination Team

- Form a dedicated core team to handle all aspects of the visit, led by a senior officer with members from departments such as Security, Travel & Hospitality/ Protocol, Estate/ Administration, HR, Publicity/ Marketing, etc.
- Assign roles such as logistics management, protocol adherence, and media handling.

### c. Liaise with the Parliamentary Secretariat

- Establish clear communication with the committee's secretariat to understand expectations, schedules, and protocol.
- Request a formal visit program or guidelines.

### d. Select the Venue and Route

- Finalize the venue as per government protocol that align with the committee's agenda,



in consultation with the Parliamentary committee Secretariat.

- Stay arrangement of the Committee members should be in vicinity of the meeting venue.
- Plan safe and efficient transportation routes within the facility.

## 2. Logistical Arrangements

### a. Travel and Accommodation

- Arrange transportation for committee members befitting to their stature (e.g., cars, buses).
- Book suitable accommodation at government-approved facilities, if not available, accommodation may be booked at hotels.
- Doctor with Ambulance should be arranged at the venue.

### b. Preparation for field visits, if any

- Ensure the site areas are clean, safe, and operationally ready.
- Arrange safety gear (helmets, gloves, etc.) if required for industrial sites.
- Prior Access permission/ passes should be obtained.

### c. Meeting Facilities

- Prepare a conference room with proper seating arrangements along with AV equipment, and refreshments.
- Provide relevant documents, reports, and presentations in advance.

### d. Protocol Arrangements

- Organize welcome protocols (e.g., reception by PSU officials).
- One seasoned & groomed Protocol Officer should be assigned with each member.
- Ensure the presence of relevant senior officers to accompany the committee.

## 3. Stakeholder Coordination

### a. Internal Team

- Brief PSU officials and employees on the visit

and their roles.

- Conduct rehearsals if required for presentations and interactions.

### b. External Agencies

- Coordinate with local administration (e.g., police, municipal authorities) for security and traffic arrangements.
- Involve protocol officers for all VIP movement.

### c. Media Handling

- Prepare a press kit with key information about the visit.
- Arrange for a media officer to handle press inquiries, if allowed.

## 4. Day of the Visit

### a. Arrival and Reception

- Ensure a smooth reception with punctuality and adherence to protocol.
- Provide the committee members with a briefing schedule or itinerary.

### b. Guided Tour and Presentations

- Assign knowledgeable personnel to guide the committee.
- Deliver concise, fact-based presentations with supporting data.

### c. Address Queries and Concerns

- Ensure subject matter experts are available to address questions or concerns raised by the committee.

### d. Record Proceedings

- Maintain minutes of meetings and document key observations.

## 5. Post-Visit Actions

### a. Prepare and Submit Reports

- Draft a visit summary report, incorporating feedback and follow-up actions.
- Submit the report to the parliamentary secretariat or concerned authorities.

### b. Address Recommendations

- Act on any recommendations made by the committee during the visit.

- Share progress updates with the committee, if required.

### c. Acknowledge and Appreciate

- Send formal letters of thanks to the committee and associated stakeholders for their time and input.

## 6. Key Tips for Success

- **Adhere to Protocol:** Respect the hierarchy and parliamentary norms throughout.
- **Be Transparent:** Share accurate and complete information without concealing issues.
- **Ensure Safety:** Prioritize safety, especially in industrial or hazardous areas.
- **Plan for Contingencies:** Have a backup plan for unforeseen issues (e.g., delays, weather).

By following above mentioned steps, Convenor Bank can ensure a smooth and productive parliamentary committee visit, reinforcing trust and accountability. However protocol requirements during such visits carries the highest importance and need to be adhered meticulously.

Protocol requirements during parliamentary committee visits

Protocol requirements during parliamentary committee visits to Public Sector Banks (PSBs) are crucial to maintain decorum, adhere to governmental norms, and ensure a smooth interaction between committee members and PSB representatives. These requirements focus on hierarchy, formalities, and coordination. Below are the key protocol-related aspects:

### 1. Communication and Liaison

- **Official Communication:** All interactions should be routed through the parliamentary secretariat or the committee's designated liaison officer.
- **Advance Intimation:** Receive official notification about the visit, including the purpose, delegation details, and itinerary.
- **Single Point of Contact (SPOC):** Assign a

senior officer from the PSB as the official point of contact for coordinating all arrangements.

## 2. Hierarchy and Respect

- **Senior Representation:** Ensure that the PSB's top officials (e.g., MD & CEO, Executive Directors, or senior executives) are present to receive and interact with the committee.
- **Priority to MPs:** Parliamentary committee members must be given precedence over other officials. Address them with their appropriate titles (e.g., Hon'ble Member of Parliament).

## 3. Welcome Protocol

- **Reception:** A senior official should formally receive the committee at the designated entry point (e.g., airport, helipad, or Bank premises).
- **National Symbols:** Arrange for the display of the national flag at the venue, if applicable.
- **Escort Services:** Provide vehicles with clear identification and appropriate seating arrangements for the committee members. A nameplate mentioning the Parliamentary Committee should be affixed on each vehicle.

## 4. Security Arrangements

- **Coordination with Local Authorities:** Work with the police and other agencies to ensure adequate security for the visiting MPs.
- **Access Control:** Ensure only authorized personnel are present in the areas visited by the committee.
- **Industrial Safety:** Provide necessary safety equipment (helmets, goggles, etc.) if the visit involves industrial or hazardous sites.

## 5. Meeting and Hospitality Protocol

- **Conference Setup:** Organize a formal meeting space with proper seating arrangements based on hierarchy:
  - ✓ Chairperson of the committee at the head



of the table.

- ✓ PSU executives and members of the committee seated appropriately.
- **Refreshments:** Provide standard hospitality as per government norms (e.g., tea, coffee, snacks, or lunch, if scheduled).
- **Document Distribution:** Share agenda documents, presentations, or other relevant reports in advance, ensuring they are printed neatly and contain necessary details.

## 6. Presentation and Briefing

- **Concise Presentations:** Prepare data and reports that align with the committee's focus areas.
- **Language and Tone:** Use formal language and address committee members respectfully.
- **Focus on Facts:** Avoid overly promotional content and present a balanced view, including challenges faced by the PSU.

## 7. Adherence to Parliamentary Decorum

- **Confidentiality:** Respect the sensitive nature of the committee's discussions. Avoid media leaks or unauthorized disclosures.
- **No Media Presence:** Unless specifically permitted, media should not be present during the visit or meetings.
- **No Political Bias:** Discussions should remain professional and neutral, avoiding political or contentious remarks.

## 8. Cultural and Regional Sensitivity

- **Local Representation:** Include local cultural elements, if appropriate, to welcome the delegation (e.g., traditional greetings or souvenirs).
- **Language Support:** Arrange translators or interpreters if required, ensuring smooth communication.

## 9. Follow-Up and Documentation

- **Minutes of Meetings:** Maintain official records of discussions, observations, and directions from the committee.
- **Acknowledgment:** Send a formal thank-you letter to the committee after the visit.

## 10. Key Dos and Don'ts

### Do's

- Follow the **Warrant of Precedence** while dealing with committee members.
- Ensure **timeliness** for all activities, including reception, meetings, and tours.
- Display **preparedness** and **professionalism**.
- Ensure proper decorum, discipline and punctuality during complete tour.
- All teams, Protocol Officers, Hotel/ Govt. Accommodation Staff, teams of other participating agencies should be properly briefed at each stage of the program.

### Don'ts

- Avoid delays or last-minute changes to the itinerary without proper intimation.
- Refrain from sharing **unverified or incomplete information** with the committee.
- Do not allow **unauthorized personnel** to interfere with the visit.

By adhering to these protocol requirements, Convenor Bank can maintain professionalism, facilitate effective discussions, and uphold the dignity of the parliamentary committee as well as the respective Public Sector Bank.

**Pramod Kumar**  
Chief Manager  
Security Department  
Head Office



## एक पेड़ माँ के नाम

विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून, 2024 के अवसर पर “एक पेड़ माँ के नाम” अभियान की शुरुआत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने की। “एक पेड़ माँ के नाम” एक प्रयास है जो हमारी मातृभूमि और प्रकृति के प्रति हमारे सम्मान और समर्पण को दर्शाता है।

इस पहल को सार्थक बनाने की दिशा में एवं पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने की तत्काल आवश्यकता को समझते हुए, बैंक ऑफ़ इंडिया ने अपने कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (Corporate Social responsibility) को निभाते हुए Grow-Trees के ट्रेडमार्क के तहत मेसर्स पैजिया इकोनेटएसेट्स प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से महाराष्ट्र के यवतमाल जिले में “ग्रामीणों के लिए पेड़” परियोजना के तहत 8,500 पेड़ लगाकर वृक्षारोपण अभियान को गति प्रदान की है।

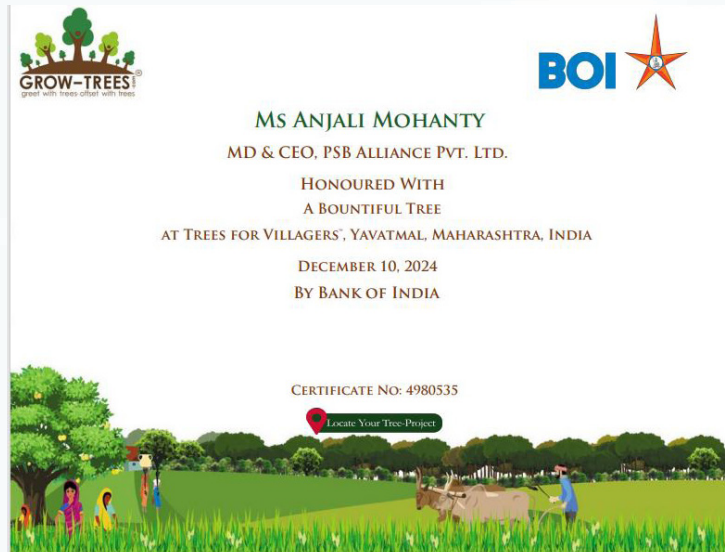
Grow-Trees.com पर्यावरण संरक्षण के लिए बड़े पैमाने पर पेड़ लगाने के लिए समर्पित एक ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म है। वे ग्रामीण विकास, वन्यजीव बहाली और शहरी हरियाली का समर्थन करने वाली परियोजनाओं का प्रबंधन करते हैं। यह प्लेटफ़ॉर्म व्यक्तियों और संगठनों को पेड़ लगाने और ई-ट्री सर्टिफिकेट भेजने की अनुमति देता है, जो पुनर्वनीकरण और कार्बन ऑफसेट प्रयासों में योगदान देता है। आज तक, उन्होंने

लाखों पेड़ लगाए हैं, रोजगार पैदा किया है और कार्बन को काफी हद तक अवशोषित किया है।

उनकी प्रक्रिया में सरकारी या सामुदायिक भूमि पर पेड़ लगाना शामिल है, जिससे दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित होती है। स्थानीय समुदाय पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने में समर्थ हैं, जिससे आय सृजन को बढ़ावा मिलता है। जैव विविधता को संरक्षित करने के लिए केवल देशी प्रजातियों को ही लगाया जाता है, और जब आवश्यक हो तो पत्थर की दीवारों जैसे सुरक्षात्मक उपायों का उपयोग किया जाता है।

इस वृक्षारोपण अभियान का भौगोलिक निर्देशांक (Geo-tagging) भी दिया गया है। अर्थात् हम कहीं से भी ऑनलाइन माध्यम से इन वृक्षों की निगरानी कर सकते हैं। बैंक ऑफ़ इंडिया कार्बन पदचिन्ह को कम करने और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है। अब हम सभी कार्यक्रमों और आयोजनों में अपने अतिथियों और गणमान्य व्यक्तियों का अभिवादन “डिजिटल प्रमाणपत्र” के द्वारा करते हैं।

हाल ही में हुए संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तहरि मेहताब जी ने बैंक ऑफ़ इंडिया के इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा भी की।



## माँ के अधूरे सपने

कई बार उस टीन के बक्से में,  
तेरे सपनों को समेटे देखा है,  
कई बार आंसू पोंछते हुए,  
तुझे हंसते देखा है।

प्रेम, त्याग, ममता की मूरत,  
सब तुझको पुकारते हैं,  
मगर तेरे कोमल दिल की तमन्ना,  
हम समझ नहीं पाते हैं।

देखा है तुझको,  
तेरे जज्बात छुपाते हुए,  
उन उम्मीदों भरी आँखों में,  
हम कुछ पढ़ नहीं पाते हैं।

आज जब तेरे कपड़ों में,  
खुद को पाया तो जाना है,  
अब अहसास हुआ हमें,  
जब बच्चे कुछ नहीं समझ पाते हैं।

इस कठोर दुनिया को,  
तेरी ममता से पिघलना होगा,  
अब तुझे अपने सपनों को,  
और नहीं दबाना होगा।  
मां तो तू है सबकी पर,  
तुझे खुद के लिए भी जीना होगा।

संदूकों में ही रह गई  
तेरी, खुशियों की दुनिया सारी,  
हमारे लिए तूने  
अपनी नई दुनिया बसाई।

लोरी संग जो सिसकियां छुपीं,  
वो अब सुनाई देती हैं।  
तकलीफ में आंखें मूंदें,  
तो तू ही दिखाई देती है।

मां, तेरा वो त्याग  
मां बनकर ही जाना,  
आसान नहीं होता मां  
यह कर्तव्य निभाना।

तेरे अधूरे सपनों को  
हम अब पूरा कर पाएंगे,  
तेरे जीवन की हर खुशियों को  
तेरे आंचल में लाएंगे।

वो हंसी जो कभी गुम थी,  
अब हर दिन तुझसे मिलेगी,  
तेरे सपनों को अब पंख मिलेंगे,  
तेरी दुनिया फिर से खिलेगी।

श्रीमती श्रुति रानी  
प्रबंधक  
बोकारो आंचलिक कार्यालय





## भूली-बिसरी यादें : तारांगण के पुराने अंक से

**बैंक ऑफ इंडिया**

एक्सप्रेस टावर  
नरीमन प्वाइंट  
पम्बई-400 021.



सहायक  
GENERAL MANAGER

**BANK OF INDIA**  
EXPRESS TOWERS  
NARIMAN POINT  
BOMBAY-400021.

एच.आर.डी.  
पुस्तक

मानव संसाधन का विकास  
- प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी



आमतौर पर ऐसा माना जाता है कि मानव संसाधन विकास की जिम्मेदारी  
सिर्फ प्रधान कार्यालय की है.

2. हालांकि यह बात कुछ हद तक सही है क्योंकि प्रधान कार्यालय मानव संसाधन  
के प्रति बैंक की वचनबद्धता को ध्यान में रखते हुए उसके विकास से संबंधित नीति तैयार  
करता है और उसपर कार्यान्वयन के आदेश देता है परंतु प्रधान कार्यालय इस बृहत् कार्य को  
अकेले नहीं निभा सकता.

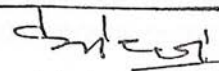
3. साधारणतः, प्रधान कार्यालय, मानव संसाधन विकास से संबंधित कुछ मुद्दे, अर्थात्  
सेवा में उन्नति करने संबंधी योजना, उत्तराधिकार संबंधी योजना, प्रशिक्षण, स्थान -  
निर्धारण, पदोन्नति, मोनेटरी पैकेज इत्यादि के बारे में उचित नीति बनाकर कार्यान्वयन  
के लिए पहल करता है. परंतु सिर्फ नीति बनाना ही तबकुछ नहीं है बल्कि उसका परिणाम  
इस बात पर निर्भर है कि इन नीतियों पर प्रत्येक स्तर पर किस तरह से अमल किया जाता  
है और उसी वक्त हम में से प्रत्येक को अपना-अपना कर्तव्य निभाना होता है. यह भी खयाल  
रखा जाना चाहिए कि पारदर्शिता, सुलाभन, निष्पक्ष व्यवहार, न्याय, सहयोग इत्यादि  
संकल्पना पर सही मायने में अमल किया जाना आवश्यक है. उसी तरह, सभी शाखाओं /  
कार्यालयों में हम में से प्रत्येक की यह जिम्मेदारी होगी कि हम स्टाफ को प्रोत्साहित करें  
और उन्हें उचित मार्गदर्शन दें.

4. एक शाखा प्रबंधक के तौर पर अथवा जहां तक संबंध है एक दल के नेता के तौर पर,  
चाहे दल छोटा क्यों न हो, हममें से प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य होगा कि इस काम से  
जुड़कर मानव संसाधन विकास कार्य में अपना-अपना सहयोग दें. हमें अपने सहकर्मियों की क्षमता  
के बारे में जान लेना चाहिए और उचित स्थान पर रखकर उन्हें हर प्रकार का कार्य करने का  
मौका देना चाहिए ताकि उन्हें अपनी उन्नति का अवसर उपलब्ध हो सके. हमारा यह कर्तव्य  
होगा कि हम अपने सहयोगी व्यक्तियों के योग्य गुणों को प्रोत्साहन दें और उनसे संवाद  
के जरिये उनकी कमियों/कमजोरी को दूर करने में उनकी सहायता करें. एक दल के प्रमुख के रूप  
में, हमें अपने साथियों के साथ सतत चिन्ता-विमर्श करके उन्हें अपेक्षित सहयोग देकर उनकी प्रगति  
में सहायक होना चाहिए. अपने कार्यालय में हमें सौहार्द का वातावरण निर्माण करना चाहिए  
और एक परिवार जैसा माहौल बनाये रखना चाहिए. स्टाफ से प्राप्त उचित शिक्षाओं का  
योग्य निराकरण करने की प्रणाली अपनाना मानव संसाधन विकास में सहायक साबित होगा.

5. क्या हम ये सब कर रहे हैं? अगर नहीं, तो अभी भी देर नहीं हुई है. शुभकामना  
सोचिए!

एचआरडी/2 : 24. 10. 95

§ सभी स्टाफ सदस्यों के लिए §

  
§ के. एम. मेहरोत्रा §

# विक्रमशिला विश्वविद्यालय : हमारे गौरवशाली अतीत का मूक अनुर-मारक

वैभवशाली इतिहास, उत्कृष्ट स्थापत्य कला, बेहतरीन नक्कासी और लाजवाब शिल्पकारी का अनुपम उदाहरण विक्रमशिला विश्वविद्यालय, जिसने विश्व को ज्ञान का पाठ पढ़ाया, आज अपने भग्नावशेषों के साथ इतिहास की खिड़कियों से झांक रहा है। आठवीं शताब्दी में पाल वंश के राजा धर्मपाल द्वारा स्थापित किया गया विक्रमशिला विश्वविद्यालय सिर्फ एक शैक्षणिक संस्थान ही नहीं था, बल्कि ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति का विश्व स्तरीय केंद्र था, जहां दूर-दूर से छात्र और विद्वान अपनी ज्ञान-पिपासा शांत करने आते थे। विक्रमशिला की प्रसिद्धि विशेष रूप से बौद्ध धर्म और तंत्र की शिक्षा के लिए थी। यहां अध्ययन करने वाले छात्रों को शास्त्रों और ग्रंथों की शिक्षा के साथ-साथ चिकित्सा, विज्ञान, कला और शिल्प की भी गहन शिक्षा दी जाती थी। इसके साथ ही इस विश्वविद्यालय ने अपने समय के पहले कुलपति, प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान, अतीश दीपंकर को भी जन्म दिया, जिनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। इसके विशाल पुस्तकालय में अनगिनत पांडुलिपियाँ थीं, जिनमें भारतीय ज्ञान की अमूल्य धरोहर संग्रहित थी।

“एक समय जब ज्ञान को पवित्र और शिक्षा एक साधना माना जाता था, तब नालंदा और विक्रमशिला जैसे भारतीय विश्वविद्यालय ऐसे साधनास्थल बन गए, जहां मानव सभ्यता के स्वरूप को सचेतन रूप से गढ़ा गया। प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति शिक्षण से बढ़कर ज्ञान को आत्मसात करने की व्यवस्था थी, जिससे ऐसे मस्तिष्क विकसित होते थे जो मानव चेतना को सभ्यता एवं समाज के कल्याण से परस्पर जोड़कर अध्ययन-मनन के उद्देश्य को सफल बनाते थे। प्राचीन भारतीय गुरुकुलों और विश्वविद्यालयों ने आत्मचिंतन के बीज

बोए, उनके अनुसंधानों ने यह सिद्ध किया कि सच्ची शिक्षा भीतर छुपी हुई क्षमताओं को जगाना है। उन गुरुओं ने आत्म-अन्वेषण के उस शाश्वत प्रश्न को प्रज्वलित किया, जिसने मानवता की सामूहिक चेतना को उधर्वदर्शी बनाया। नालंदा और विक्रमशिला की लाइब्रेरी में ज्ञान को संग्रहित नहीं किया गया, अपितु उसे मुक्त किया गया, यह सिखाते हुए कि विचारों का विकास ही अस्तित्व का विकास है।”

1203 ईस्वी में बख्तियार खिलजी ने इस विश्वविद्यालय पर हमला किया और इसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया। यहां उपस्थित सभी मूर्तियों का अंग-भंग कर दिया, पुस्तकालय में आग लगा दी और शास्त्रों के विशाल संग्रह को राख में बदल दिया। विश्वविद्यालय के खंडहरों में आज भी उस प्राचीन गौरवशाली युग की अनुगुंज सुनाई देती है।

वर्तमान में विक्रमशिला भागलपुर से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर, कहलगांव ब्लॉक में स्थित है। पर जहाँ कभी एक भव्य और समृद्ध विश्वविद्यालय हुआ करता था, वहाँ अब सिर्फ खंडहरों का ढेर ही बचा है। विक्रमशिला के खंडहरों पर घूमते समय आपको दीवारों पर उकेरी गई बारीक नक्काशियाँ और शिल्पकारियों की झलक मिलती है। ये शिल्पकारियाँ सिर्फ कलात्मक नहीं हैं, बल्कि उस समय की तकनीकी दक्षता और सांस्कृतिक समृद्धि की कहानी कहती हैं।

हालांकि, आज विक्रमशिला सिर्फ एक खंडहर है, लेकिन इसकी हर एक शिला, हर एक दीवार और हर एक मूर्ति के पीछे छिपा हुआ इतिहास हमें उस युग की याद दिलाता है, जब यह विश्वविद्यालय ज्ञान का प्रकाश-पुंज हुआ करता था। विश्वविद्यालय में सौ से अधिक शिक्षक थे। यहाँ भारत और विदेशों, जैसे तिब्बत, चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया



से हजारों छात्र अध्ययन करने आते थे। विश्वविद्यालय का संचालन विद्वान भिक्षुओं की एक परिषद द्वारा किया जाता था और यह एक मठीय संस्थान के रूप में कार्य करता था, जो बौद्ध सिद्धांतों का पालन करता था। यह बौद्ध ग्रंथों के अन्य भाषाओं में अनुवाद का केंद्र भी था, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला।

विक्रमशिला के खंडहरों की खोज 19वीं और 20वीं शताब्दी में ब्रिटिश पुरातत्वविदों द्वारा की गई। खुदाई में इसकी भव्य संरचना, मुख्य स्तूप, मठ और मंदिरों का पता चला। आज, विक्रमशिला भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली और बौद्ध परंपराओं का प्रतीक है। इसे ऐतिहासिक स्मारक के रूप में संरक्षित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। विक्रमशिला के खंडहर अब एक प्रमुख पर्यटक स्थल और इतिहासकारों तथा पुरातत्वविदों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। इसके इतिहास को याद करने के लिए कार्यक्रम और उत्सव आयोजित किए जाते हैं और इसकी शिक्षाओं को पुनर्जीवित करने के प्रयास जारी हैं। विक्रमशिला का अतीत हमें आज भी गर्व और सम्मान से भर देता है। यह हमारे गौरवशाली अतीत का अनुस्मारक है। हमारी धरोहर है, जिसे संजोना और संरक्षित करना हमारी जिम्मेदारी है।



800 साल पहले यहाँ एक भव्य एवं व्यस्त विश्वविद्यालय हुआ करता था।



उत्कृष्ट स्थापत्य कला दर्शकों का मन मोह लेती है।



बौद्ध भिक्षुओं का प्रार्थना स्थल।

शैलेंद्र कुमार दुबे  
उप आंचलिक प्रबंधक  
भागलपुर अंचल





## New Delhi BOI Star Run 2.0



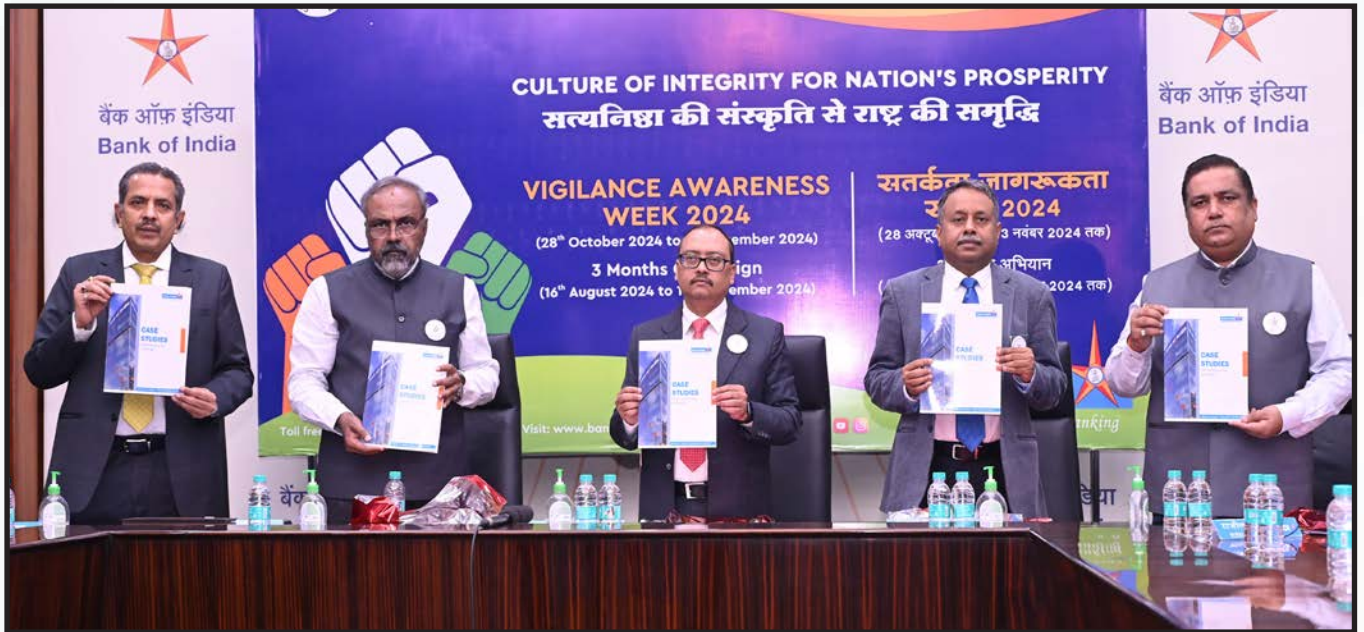
In a spectacular display of togetherness and commitment to employee wellness, New Delhi Zone successfully organized 'BOI Star Run 2.0' on October 13, 2024. The event marked a significant milestone in the bank's ongoing efforts to promote health and fitness amongst its staff, customers and people at large. The event featured 10KM/5KM Run and Walk for different age categories. This diverse range of activities ensured that everyone, from professional runners to casual fitness enthusiasts, could participate and contribute to the spirit of the event. The BOI Star Run 2.0 was not just a standalone bank event but a significant contribution to the larger 'Fit India' movement initiated by the Government of India.

Mr. Lokesh Krishna, General Manager, FGMO, New Delhi presented the medals, emphasizing the bank's commitment to recognizing and rewarding excellence in all forms. Mr. Amit Singh, Zonal Manager, New Delhi Zone, elaborated on this alignment: "At Bank of India, we believe in holistic development. By encouraging our staff, customers, and partners to participate, we're fostering a culture of fitness that extends beyond our organization and into the community at large." The success of BOI Star Run 2.0 extended far beyond the finish line. Many participants reported a renewed interest in fitness and a commitment to incorporating regular exercise into their routines.



## प्रधान कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार दिनांक 28 अक्टूबर 2024 से 03 नवंबर 2024 तक प्रधान कार्यालय में 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का आयोजन "सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि" की थीम पर किया गया। इस दौरान प्रधान कार्यालय में सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम जैसे कि कार्यशालाएँ, व्याख्यान, ऑनलाइन क्विज एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रमों में स्टाफ सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर सहभागिता की। इस दौरान पारदर्शिता को मजबूत करने के लिए ऑनलाइन सतर्कता शिकायत प्रक्रिया मॉड्यूल (OVCPM) भी लॉन्च किया गया। हमारे बैंक के कुल 17036 कर्मचारियों ने सत्यनिष्ठा की 'ई-प्रतिज्ञा' ली। इस दौरान प्रधान कार्यालय में वाकथॉन और मानव श्रृंखला का भी आयोजन किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित कुछ कार्यक्रमों के फोटो निम्नानुसार हैं।





कारोबार प्रसार एवं एन.आर.आई. बैठक / Business Promotion & NRI Meet





## सतकता जागरूकता/ स्वच्छता अभियान





## एक पेड़ माँ के नाम / Ek Ped Maa Ke Naam





## Special Moments / Awards



BOI has been awarded 2nd runner up position by Dr. Vivek Joshi, Secretary, DFS under Top Improver Category in Launch of EASE 7.0 Agenda and EASE 5.0 Citation Awards ceremony received by Shri Sunil Sharma GM, BPR & Planning.



IBU GIFT City hosted a delegation from the Asia Pacific Loan Market Association (APLMA), Hongkong on 19.11.2024, led by Mr. James Hogan, CEO and Ms. Chiva Lai, Senior Director.

## नई शाखाओं का उद्घाटन / New Branches Opening



होजाई शाखा – गुवाहाटी अंचल



कोयल शाखा – संबलपुर अंचल

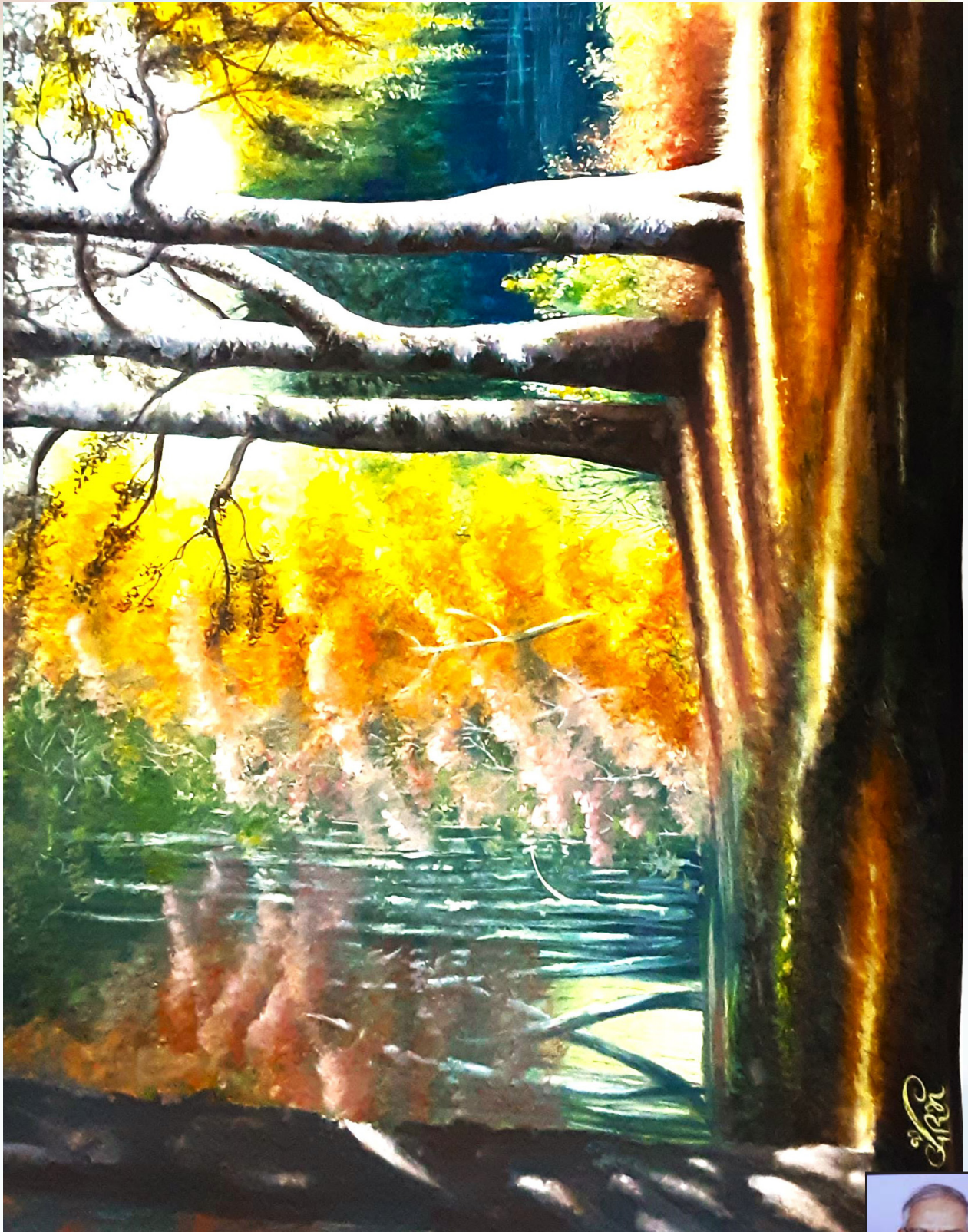


इमर्जिंग कॉर्पोरेट क्रेडिट शाखा – लखनऊ अंचल



तुमीगडिया शाखा – बारपदा अंचल





**Saurabh Shrivastav**  
Sr. Manager, Mumbai North Zone